संगम

हिन्दी पत्रिका | सितंबर 2025

ज्ञानम् अनन्तम्
IIM
TRICHY

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

Indian Institute of Management Tiruchirappalli

पत्रिका समिति के सदस्यगण:

प्रो. जंग बहादुर सिंह

प्रो. अभिषेक तोतावार

प्रो. शालिनी पार्थ

प्रो. रमेंद्र प्रताप सिंह

डॉ. के. इलवल़गन

श्री चन्द्र मोहन तिवारी

प्रतिलिप्याधिकार:

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की लिखित अनुमति के बगैर किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेरोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित

पुस्तक : संगम

© भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरूचिरापल्ली

संस्करण : पांचवां

वर्ष : अप्रैल से सितंबर, (2025-26)

प्रकाशक: भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरूचिरापल्ली

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रक:

सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि.
बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-1, 13वां तल, यूनिट 29, ब्लॉक ईएम-3, सेक्टर-V
साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल – 700091

‘वृक्षों में मैं पीपल (अश्वत्थ) हूँ।’

– भगवान श्रीकृष्ण ने कहा

भगवद्गीता, अध्याय १०, (विभूति योग), श्लोक २६

विषय-सूची

सम्पादकीय 3

निदेशक का संदेश 4

लेख

परिवर्तन की परिभाषा — प्रौद्योगिकी और समाज: विपणन प्रबंधन के आलोक में एक समालोचनात्मक विश्लेषण 5

समाज, सोशल मीडिया से चैटजीपीटी तक 8

एक दिन मोबाइल के साथ 9

मेटावर्स में साइबर नैतिकता, गोपनीयता एवं सुरक्षा के उभरते खतरे तथा नीतिगत समाधान 10

परिवर्तन की परिभाषा: प्रौद्योगिकी और समाज 14

पलायन और भाषा 16

गुरुकुल में श्रीकृष्ण ने क्या सीखा? 17

संस्थान में हिंदी की प्रगति 18

अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सीढ़ी चढ़ना 22

सिद्ध चिकित्सा और जीवनशैली 23

जीवन की सार्थकता 24

इक्कीसवीं सदी में भारतीय महिला उद्यमियों का परिदृश्य 25

नारी एक : रूप अनेक 27

तकनीक और आज के बच्चे 28

कविता

मानवता और विज्ञान से भविष्य का मिलान 29

परिवर्तन की परिभाषा -प्रौद्योगिकी और समाज 30

युग प्रवर्तक 30

कहाँ जा रहा है समय का रथ? 31

चाँद और अंधकार 32

मानव 33

नवा-ए-ख़ुदी 33

शुक्रन 34

कुछ तो बदल गया है यार! 34

मैं आया था सपना लेकर 35

प्रेम की परिभाषा 36

मन का दिया तो जला ले 37

परिवर्तन की परिभाषा -प्रौद्योगिकी और समाज 37

तकनीक — एक रंग 38

तू क्यों सिर्फ बदलाव का सोचता है?? 38

अस्तित्व 39

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

हमें संस्थान की हिंदी पत्रिका 'संगम' के पाँचवें संस्करण को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस वर्ष हमने एक समसामयिक विषय—"परिवर्तन की परिभाषा - प्रौद्योगिकी और समाज" की परिकल्पना को आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। पत्रिका का शीर्षक- संगम— एक संप्रवाह- हमें स्मरण कराता है कि परिवर्तन कभी अकेले नहीं आता; यह संस्कृति, संस्थाओं और दैनिक जीवन का समागम है तथा उस मिलन बिंदु पर एक नवीन स्वरूप का सृजन होता है। वर्तमान संस्करण की विषयवस्तु पर गहन मंथन से पूर्व, हम संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर पवन कुमार सिंह के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। उनका निरंतर प्रोत्साहन, विवेकपूर्ण मार्गदर्शन व उदार समर्थन 'संगम' पत्रिका के पाँचवें संस्करण को साकार कर रहा है।

हमारे आवरण चित्र में विषयवस्तु को बारीकी से दर्शाया गया है: पीपल का पत्ता एक श्याम पृष्ठभूमि पर स्थित है; इसकी प्राकृतिक शिराएँ सिरे की ओर पतली होकर सूक्ष्म परिपथ रेखाओं में परिवर्तित हो जाती हैं। यह चित्र निरंतरता का नवाचार में परिवर्तन का संकेतक है—जीवन का अपना जालतंत्र हमारे द्वारा आरेखित परिपथ में विकसित हो रहा है। भगवद् गीता में, पीपल (अस्वत्थ) को विशिष्ट महत्ता युक्त वृक्ष के रूप में उद्धृत किया गया है— जो गहरी जड़ों वाला, व्यापक रूप से शाखाओं युक्त है। आवरण सहित पत्रिका का पठन, एक जीवंत सिद्धांत की ओर संकेत देता है कि पोषण प्रदान करने वाले पर दृढ़ता से टिके रहें और दायित्व के साथ नए की ओर उन्मुख हों।

इतिहास के दृष्टिकोण से तकनीकी बदलाव अक्सर आरंभ में विघटनकारी लगे हैं- जैसे कि भूमिकाओं, उपकरणों एवं कौशल में परिवर्तन, जिन्हें हम सदैव महत्व दिया करते हैं। फिर भी, तकनीकी द्वारा समय-समय पर नूतन कार्य, नए शिल्प एवं सहयोग के नए रूप गढ़े गए हैं। विस्थापन के रूप में शुरूआत अक्सर पुनर्रचना में परिवर्तित हो जाती है : कार्यों का पुनर्गठन होता है, क्षमताओं का पुनर्मूल्यांकन होता है एवं नए अवसर उभरते हैं। हम सभी—छात्रों, शिक्षकों, पेशेवरों और रचनाकारों के लिए—यह चुनौती है कि हम व्यग्रता से नवीनीकरण की ओर अग्रसर हों: निर्णय, दायित्व तथा सत्यनिष्ठा जैसे मूलभूत गुणों को अपने अद्यतन उपकरणों की शैली में परिवर्तित करने का उद्यम करें।

इस संस्करण में आपका इस भावना से साक्षात्कार होगा। इस विषय का चित्रण कई योगदानकर्ता ने अपने निबंधों और आत्म-चिंतन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अन्य लोग परिवर्तन को अप्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, यह उल्लेख करते हुए कि कैसे भाषा, स्मृति और शिल्प में छोटे-छोटे परिवर्तन हमारी दुनिया को नया स्वरूप दे सकते हैं। ये रचनाएँ दृष्टिकोण युक्त एक संगम का निर्माण करती हैं— जो 'संगम' शीर्षक को चरितार्थ करता है।

पत्रिका लेखन में हमारे रचनाकारों की संपूर्ण निष्ठा हेतु, हम उनके योगदान के लिए साधुवाद प्रकट करते हैं। हमारे प्रबुद्ध पाठकवर्ग द्वारा प्रत्येक संस्करण को जिज्ञासा और विचारशील आलोचना के साथ पढ़ने के लिए हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

आशा करते हैं कि संगम के इस पाँचवें संस्करण के आवरण पर प्रस्तुत पीपल के पत्ते से आपमें एक शांत संकेत का आभास संचारित हो : आइए हम उन मूल्यों में जड़ें जमाएँ, जो साझा उद्देश्य को पोषित करते हैं, साथ ही सीखने, उद्यमशीलता और सहानुभूति के लिए नए आयाम भी स्थापित करें। परिणामस्वरूप परिवर्तन एक विखंडन नहीं है, अपितु एक संगम के रूप में परिलक्षित हो सकता है—एक जीवंत विलय—जिसके माध्यम से हम एकता और विश्वसनीयता के साथ पुष्पित एवं पल्लवित होते हैं।

निदेशक का संदेश

डॉ. पवन कुमार सिंह
निदेशक

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली, सन् 2011 में कार्यशील हुआ। जब सन् 2021 में संस्थान का एक दशक पूरा हुआ तो कई निर्णयों में एक निर्णय यह भी लिया गया कि संस्थान द्वारा उसी वर्ष से हिन्दी-दिवस के उपलक्ष्य पर हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन होना चाहिए। हिन्दी पत्रिका का नाम रखा गया - संगम।

संगम शब्द बड़ा प्यारा है। तमिलनाडु के क्षेत्र में ही विशेषकर पांड्या के संरक्षण में आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व संगम साहित्य का काल रहा जिसमें छः शताब्दियों तक विद्वतमण्डलियों ने ज्ञानामृत का मन्थन कर तमिल साहित्य का संवर्द्धन करते हुए इसे और पुष्पित-पल्लवित किया।

संगम शब्द का उपयोग हम नदियों के मिलन बिन्दु के सन्दर्भ में भी करते हैं। प्रयागराज का संगम तो जगतप्रसिद्ध है ही, इसके अलावा कई अन्य नदियों के संगम भी अत्यन्त रमणीक दृश्य उपस्थित करते हैं। लद्दाख में श्योक तथा नुब्रा का संगम, पंजाब में सतलुज तथा व्यास का संगम, उत्तर प्रदेश में यमुना तथा चम्बल का संगम, बिहार में गंगा तथा सोन का संगम, बंगाल-सिक्किम में तीस्ता तथा रंगित का संगम, कर्नाटक-तेलंगाना में कृष्णा तथा भीमा का संगम, छत्तीसगढ़-तेलंगाना में गोदावरी तथा इन्द्रावती का संगम एवं तमिलनाडु में कावेरी तथा भवानी का संगम और अन्यान्य नदियों के मिलनबिन्दु अत्यन्त नयनाभिराम दृश्य उपस्थित करते हैं।

संगम का अर्थ मनोभावों के मिलने के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है। इसी सन्दर्भ के अर्थ की आवश्यकता हमारे देश को एवं समस्त विश्व को इस वर्तमान समय में सबसे अधिक है। जोड़ने की शक्ति को एवं तोड़ने की शक्ति को भगवद्गीता में क्रमशः दैवीशक्ति एवं आसुरी शक्ति के रूप में इंगित किया गया है।

संगम पत्रिका का पंचम संस्करण आपके हाथों में है। इस अंक मे हम पहली बार यह प्रयास कर रहे हैं कि इसका प्रकाशन किसी चुने हुए विषयवस्तु पर हो। जो शीर्षक इस अंक के लिए तय किया गया है, वह हैः परिवर्तन की परिभाषा - प्रौद्योगिकी और समाज। वर्तमान समय में तकनीकी विकास और मनुष्य का मनुष्यत्व एक नए सन्तुलन बिन्दु की तलाश में है। कुछ लोग द्रुतगति से हो रहे तकनीकी विकास को जीवन में असन्तुलन का कारण मानते हैं। कम-से-कम मेरा मत इस विचार के पक्ष में नहीं है। तकनीकी जितना विकसित हो सके उतना ही रहस्य के ऊपर से पर्दा उठता है। ईश्वर की रचना के रहस्यों की खोज भी ईश्वरपरक कार्य ही है। इसलिए हम उच्चतर तकनीकी उपलब्धता पर दोषारोपण ना करें, बल्कि उनके सदुपयोग के विधान की खोज करें। उचित-अनुचित, वांछनीय-अवांछनीय, श्रेयस-प्रेयस, लाभकारी-मोहकारी इन दुई पर विचार कर प्रौद्योगिकी का सम्यक उपयोग मनुष्य के जीवन को संवर्द्धित कर सकता है। मनुष्य निर्मित तकनीकी यदि मनुष्य पर ही हावी हो जाए तो यह मनुष्य का दुर्भाग्य ही कहलायेगा। मात्र इस बात की आवश्यकता है कि मनुष्य तकनीकी का उपयोग करे, न कि तकनीकी मनुष्य का उपयोग करने लग जाए। विज्ञान के सूत्रों को मनुष्य के लिये उपयोगी बनाने में हेतु है प्रौद्योगिकी। एक ओर विज्ञान को मूर्त्तरूप प्रदान करने की प्राणशक्ति है प्रौद्योगिकी, तो दूसरी ओर प्रौद्योगिकी ने भाषा के विस्तार में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान देना प्रारम्भ कर दिया है। प्रौद्योगिकी की सहायता से एक भाषा से दूसरी भाषा में मौखिक या लिखित अनुवाद द्रुत गति से किये जा रहे हैं। जिस भाषा को आप नहीं जानते हों, उस भाषा के भी रसास्वादन के लिये प्रौद्योगिकी सहचरी की भूमिका निभा रही है।

सुसंस्कृत, परिष्कृत एवं आधिकारिक तौर पर स्वीकृत भाषा तो मर्यादित है ही, अन्य कई बोलियाँ जो भारतवर्ष में बोली जातीं हैं, वे सभी सम्मानित बोलियाँ हैं। अपने देशरूपी बगिया में कई भाषा रूपी पुष्प खिले हुए हैं। यह सुन्दर बगिया चतुर्दिक सुगन्ध से परिपूरित है। हम, सभी भाषा के प्रति आत्मीयता का भाव रखें। गोस्वामी तुलसीदासजी ने दोहावली में लिखा - का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच। अर्थात्, साहित्यिक गरिमा से सजी-लदी भाषा हो या किसी सुदूर प्रदेश के किसी छोटे से क्षेत्र में बोले जाने वाली कोई आम बोलचाल की भाषा हो, दोनों भाषाएँ आपके हृदय को स्पन्दित कर सकती हैं, यदि आपने इन भाषाओं के प्रेम तरंग को पहचान लिया हो। हम हिन्दी भाषा में निहित रस को पहचानें तथा इसका अधिकाधिक उपयोग कर भाषा का आनन्द लें। शुभमस्तु!

परिवर्तन की परिभाषा — प्रौद्योगिकी और समाजः विपणन प्रबंधन के आलोक में एक समालोचनात्मक विश्लेषण

प्रस्तावनाः परिवर्तन की प्रकृति और प्रासंगिकता

मान लीजिए आप किसी व्यस्त शहर के चौराहे पर खड़े हैं। चारों ओर से आती आवाज़ें — ट्रैफिक सिग्नल की बीप, मोबाइल पर बात करते लोग, पास से गुज़रती डिलीवरी बोट्स और ऊपर उड़ता एक ड्रोन — ये सब मिलकर एक ऐसी दुनिया की तस्वीर बनाते हैं जहाँ प्रौद्योगिकी केवल पृष्ठभूमि का हिस्सा नहीं, बल्कि जीवन का धड़कता तंत्र बन चुकी है। इसी चौराहे पर समाज भी खड़ा है — जाति, वर्ग, पहचान और पर्यावरणीय चेतना जैसे सवालों के साथ, जो बार-बार पूछते हैं: विकास किसके लिए, और किस कीमत पर?

यहीं से परिवर्तन की परिभाषा की यात्रा शुरू होती है। परिवर्तन अब केवल किसी तकनीक को अपनाने का निर्णय नहीं है, बल्कि यह उस निर्णय के सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक परिणामों की स्वीकार्यता और तैयारी है। विशेष रूप से विपणन प्रबंधन के संदर्भ में, जहाँ कभी उपभोक्ता सिर्फ 'लक्ष्य समूह' हुआ करता था, वहाँ अब वह एक सचेत नागरिक, विचारशील मानव और भागीदार बन चुका है।

इस निबंध में हम इसी समकालीन द्वंद्व को समझने का प्रयास करेंगे — कैसे तकनीकी नवाचार और सामाजिक पुनर्जागरण मिलकर विपणन को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं, और उसे एक अधिक जागरूक, नैतिक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण की ओर ले जा रहे हैं।

प्रौद्योगिकी और समाजः परिवर्तन के दो समवर्ती चालक

विपणन की वर्तमान दुनिया ऐसे दो शक्तिशाली प्रवाहों के संगम पर खड़ी है, जो न केवल उसकी दिशा निर्धारित कर रहे हैं, बल्कि उसके स्वभाव को भी निरंतर नया रूप दे रहे हैं — एक ओर **प्रौद्योगिकी**, जो नित नए औज़ारों और क्षमताओं के माध्यम से विपणन की कार्यप्रणाली को यांत्रिक दक्षता और डेटा-प्रेरित समझ में बदल रही है; और दूसरी ओर **समाज**, जो मानवीय चेतना, विचारधारा और सांस्कृतिक स्वायत्तता की माँग कर रहा है।

प्रौद्योगिकी के आगमन ने विपणन को एक अभूतपूर्व बदलाव के दौर में पहुँचा दिया है। मशीन लर्निंग, बिग डेटा, और क्लाउड-आधारित प्रणालियाँ अब केवल सूचना के संचय तक सीमित नहीं, बल्कि उपभोक्ता की भविष्यवाणी योग्य प्रवृत्तियों को पहचानने की शक्ति भी प्रदान करती हैं। पारंपरिक ग्राहक विभाजन (segmentation) अब पीछे छूट चुका है; उसकी जगह **हाइपर-पर्सनलाइज़ेशन** ने ले ली है, जहाँ विपणन प्रयास हर व्यक्ति की पसंद, व्यवहार और संदर्भ के अनुरूप ढाले जाते हैं। यह वह चरण है जहाँ तकनीक न केवल सहायक है, बल्कि वह रणनीतिक निर्णयों की रीढ़ बन चुकी है।

लेकिन यही परिदृश्य अधूरा होता, यदि समाज की बदलती भूमिका को समझे बिना उस पर विचार किया जाए। आज का उपभोक्ता केवल एक लक्ष्य (target) नहीं है — वह एक **जागरूक, विचारशील और सामाजिक रूप से सजग नागरिक** है, जो ब्रांड के मूल्यों, उसके व्यवहार और उसके सामाजिक संदर्भ की पड़ताल करता है। डिजिटल युग ने उसे न केवल जानकारी का अधिकार दिया है, बल्कि **आवाज़ और हस्तक्षेप की शक्ति** भी दी है। #बॉयकॉट, #मीटू, #सस्टेनेबलफैशन जैसे हैशटैग अब सिर्फ ट्रेंड नहीं, बल्कि सामाजिक दबाव की तकनीकी अभिव्यक्ति हैं, जो किसी भी ब्रांड की छवि को बना या बिगाड़ सकते हैं।

इस सामाजिक पुनर्गठन ने विपणन के चरित्र को मौलिक रूप से बदल दिया है। एक ब्रांड अब केवल उत्पाद या सेवा की प्रस्तुति नहीं करता; वह एक **संस्कृति, एक विचार और एक नैतिक रुख** भी प्रस्तुत करता है। इस बदलते परिदृश्य में, ब्रांडों को सिर्फ अच्छा दिखना नहीं, **सार्थक और जवाबदेह** भी होना पड़ता है। आज की रणनीतिक सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि ब्रांड किस हद तक तकनीकी दक्षता को सामाजिक चेतना के साथ संतुलित कर पाता है।

विपणन प्रबंधन में परिवर्तन की नई परिभाषा

विपणन अब उस बिंदु से बहुत आगे निकल चुका है जहाँ यह केवल एक उत्पाद को उपभोक्ता तक पहुँचाने का यांत्रिक उपक्रम हुआ करता था। वर्तमान संदर्भ में, विपणन प्रबंधन केवल ब्रांड और ग्राहक के बीच लेन-देन नहीं, बल्कि एक सतत, गूढ़ और बहुआयामी संवाद बन गया है — ऐसा संवाद जो न केवल वाणिज्यिक हितों पर आधारित है, बल्कि **भावनात्मक, सांस्कृतिक और नैतिक आयामों** से भी गुँथा हुआ है।

आज उपभोक्ता के साथ संबंध बनाना, बनाए रखना और उसका सतत मूल्य निर्माण करना ही विपणन की नई पहचान बन गई है। उपभोक्ता अब केवल मूल्य के आधार पर चयन नहीं करता; वह उस ब्रांड की **कहानी, विचारधारा और सामाजिक प्रतिबद्धता** को भी उसी गंभीरता

से परखता है। इसीलिए आज कंपनियाँ न केवल उत्पाद बेचती हैं, बल्कि **एक जीवनशैली, एक नज़रिया और एक सांस्कृतिक स्थिति** का प्रस्ताव रखती हैं।

उदाहरणस्वरूप, Nike एक खेल-सामग्री ब्रांड भर नहीं रह गया है। उसके अभियानों में 'साहस', 'समावेशिता', और 'स्व-विश्वास' जैसे मूल्यों का संचार होता है — और ये मूल्य उपभोक्ता की आत्म-पहचान में गहराई से गुंथे होते हैं। इस तरह, विपणन रणनीति का केंद्र अब उत्पाद नहीं, बल्कि **अर्थ, अनुभव**, और **सम्बंध** बन चुका है।

इस परिवर्तन के साथ ही डेटा की भूमिका भी एक क्रांतिकारी मोड़ पर आ गई है। डेटा अब केवल उपभोक्ता की प्रोफ़ाइल नहीं, बल्कि उसके **मनोभाव, प्रवृत्तियाँ** और **जीवनकाल मूल्य** (Customer Lifetime Value) को समझने का उपकरण बन गया है। सेंटिमेंट एनालिसिस, बायर्स जर्नी मैपिंग, और प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स जैसे डिजिटल टूल्स अब न केवल वैकल्पिक हैं, बल्कि हर आधुनिक विपणन प्रबंधक की **नीतिगत रीढ़** बन चुके हैं। इन औज़ारों की सहायता से कंपनियाँ उपभोक्ता के साथ अपने संबंधों को **आकलनीय, पुनर्रचित**, और **संवेदनशील** बना सकती हैं।

इस प्रकार, विपणन प्रबंधन की नई परिभाषा एक ऐसा फ्रेमवर्क प्रस्तुत करती है, जो **डेटा की सटीकता, ब्रांड के मूल्य**, और **उपभोक्ता की संवेदनशीलता** — इन तीनों तत्वों को संतुलन में रखकर कार्य करता है।

उपभोक्ता की भूमिका में बदलाव और सह-निर्माण का युग

कभी समय था जब ब्रांड अपने संदेश एकतरफ़ा संप्रेषण के रूप में उपभोक्ताओं तक पहुँचाते थे — जैसे कोई मंच से भाषण दे रहा हो और श्रोता केवल सुनने तक सीमित हो। लेकिन आज वह मंच ही बदल चुका है। अब मंच पर केवल ब्रांड नहीं, बल्कि उपभोक्ता भी मौजूद है — और वह श्रोता नहीं, **संवाददाता** है।

सोशल मीडिया, यूज़र-जनरेटेड कंटेंट, और **इन्फ्लुएंसर इकोनॉमी** ने उपभोक्ता को केवल 'लक्ष्य' (target) नहीं रहने दिया — उसने खुद को एक **रचनात्मक सह-निर्माता** (co-creator) के रूप में स्थापित कर लिया है। वह अब न केवल ब्रांड नैरेटिव को ग्रहण करता है, बल्कि उसे **गढ़ता, पुनर्निर्मित करता**, और कई बार **चुनौती** भी देता है। ब्रांड की कहानी अब एक **संयुक्त उपक्रम** बन गई है — जहाँ हर प्रतिक्रिया, हर मीम, और हर सोशल कमेंट उसकी पहचान का हिस्सा बन जाती है।

इसका ज्वलंत उदाहरण हम **Zomato** और **Swiggy** जैसे ब्रांडों के सोशल मीडिया अभियानों में देखते हैं। ये ब्रांड पारंपरिक विज्ञापन की भाषा को छोड़कर उपभोक्ता की **लोकभाषा, मीम-संस्कृति और हास्यबोध** को अपनाते हैं — नतीजतन उनका संवाद केवल 'संप्रेषण' नहीं रह जाता, बल्कि एक **सांस्कृतिक भागीदारी** बन जाता है।

इस सह-निर्माण की संस्कृति ने ब्रांड प्रबंधन की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती दी है। अब ब्रांड छवि किसी एक टीम के कंट्रोल रूम में बैठकर तय नहीं होती; यह **विकेन्द्रित, प्रतिक्रियाशील** और **सामाजिक रूप से ढली हुई प्रक्रिया** बन गई है। हर उपयोगकर्ता, हर रीपोस्ट, हर कमेंट — अब इस छवि का निर्माता है।

यह युग उस परिवर्तन की चरम अभिव्यक्ति है, जहाँ **विपणन अब केवल 'करने' की क्रिया नहीं**, बल्कि **'सुनने', 'समझने', और 'सहभागिता' निभाने की रणनीति** बन गया है। ब्रांड अब मंच पर अकेला वक्ता नहीं, बल्कि **भीड़ में एक संवेदनशील भागीदार** है — जो न केवल अपने विचार साझा करता है, बल्कि दूसरों की आवाज़ों से खुद को ढालना भी जानता है।

प्रबंधन की रणनीतिक दिशा में बदलाव: लचीलापन और नैतिकता

जब समाज और तकनीक दोनों दिशाओं से बदलाव को प्रेरित कर रहे हों, तो केवल विपणन रणनीतियाँ ही नहीं, बल्कि संपूर्ण प्रबंधन दर्शन स्वयं को पुनर्परिभाषित करने को विवश होता है। आज की रणनीति वह नहीं है जिसे वार्षिक रिपोर्ट में तय किया गया हो और फिर वर्ष भर के लिए स्थिर मान लिया गया हो। बल्कि वह एक **जीवंत प्रक्रिया** है — निरंतर बदलते संकेतों, संवेदनाओं और परिस्थितियों के अनुरूप ढलने वाली **सतत रणनीतिक सजगता**।

इस नवाचार और गति-प्रधान वातावरण में, लचीलापन कोई विकल्प नहीं, बल्कि नेतृत्व की अनिवार्यता बन चुका है। बाज़ार की संवेदनशीलता अब केवल मूल्य निर्धारण या उपभोक्ता प्राथमिकताओं तक सीमित नहीं है; यह **सोशल मीडिया पर वायरल ट्रेंड्स, राजनीतिक-सांस्कृतिक घटनाओं**, और **वैश्विक नैतिक विमर्शों** के प्रति भी सजगता माँगती है। ऐसे में प्रबंधन को प्रतिक्रियाशील (responsive) ही नहीं, **सहानुभूतिपूर्ण (empathetic)** भी बनना पड़ता है — ऐसा नेतृत्व जो सिर्फ़ निर्णय नहीं करता, बल्कि उनके **सामाजिक निहितार्थों को समझता है**।

इसी संदर्भ में, नैतिकता अब एक 'soft skill' नहीं, बल्कि एक **core capability** बन गई है। उपभोक्ता अब CSR (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) को एक अतिरिक्त प्रयास की तरह नहीं, बल्कि **ब्रांड की साख का बुनियादी मापदंड** मानते हैं। वे पूछते हैं — "आप किसके साथ खड़े हैं?", "आप किन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं?", और सबसे ज़रूरी — "**आप अपने लाभ के बदले समाज को क्या लौटा रहे हैं?**"

यहाँ से ब्रांड नेतृत्व केवल लाभ अर्जन की प्रक्रिया नहीं रह जाता; वह एक **मूल्यचालित नैतिक अनुबंध** बन जाता है। एक ऐसा अनुबंध जिसमें प्रबंधन को स्पष्ट करना होता है कि वह किस तरह के भविष्य की ओर अग्रसर है — और वह भविष्य उसके उत्पादों, अभियानों और सामाजिक आचरण में किस रूप में झलकता है।

इस नव-विपणन युग में, रणनीति वही टिकाऊ होगी जो **लचीली भी हो और नैतिक भी**। स्थायित्व अब केवल बाजार हिस्सेदारी में नहीं, बल्कि **सामाजिक स्वीकार्यता और सांस्कृतिक अनुकूलनशीलता** में निहित है।

भारतीय संदर्भ: तकनीकी नवाचार और सामाजिक विविधता का समन्वय

भारत में परिवर्तन की गति केवल तकनीक द्वारा नहीं संचालित हो रही — वह एक सांस्कृतिक संग्राम भी है, जिसमें नवाचार और परंपरा, आधुनिकता और पहचान, वैश्वीकरण और स्थानीयता के बीच सतत संवाद चल रहा है। जहाँ एक ओर डिजिटल क्रांति ने मोबाइल इंटरनेट और यूपीआई जैसे नवाचारों के माध्यम से **दूरस्थ गाँवों तक विपणन की पहुँच बना दी है**, वहीं दूसरी ओर भारत की गहरी **भाषाई, धार्मिक, और क्षेत्रीय विविधता** ने ब्रांड्स को हर रणनीति में **स्थानिक और संवेदनशील दृष्टिकोण** अपनाने को विवश किया है।

"वन इंडिया, वन मार्केट" जैसे नारों का स्थान अब "**कई भारत, अनेक बाज़ार**" की सच्चाई ने ले लिया है। भारत अब एक विशाल उपभोक्ता खंड नहीं, बल्कि **सैकड़ों छोटे लेकिन आपस में गुँथे हुए सांस्कृतिक ब्रह्मांडों** का देश है। यहाँ मुंबई का उपभोक्ता अनुभव कोलकाता से भिन्न है, और चेन्नई के डिजिटल उपयोग के पैटर्न लखनऊ से पूरी तरह अलग। इस परिप्रेक्ष्य में, **हाइपर-लोकलाइजेशन** कोई विकल्प नहीं, बल्कि विपणन की आधारशिला है।

डिजिटल भुगतान, क्षेत्रीय भाषाओं में कंटेंट की बाढ़, और छोटे शहरों से उभरते इन्फ्लुएंसर — ये सभी मिलकर **एक ऐसे नए उपभोक्ता वर्ग की रचना कर रहे हैं जो तकनीकी रूप से सक्षम है लेकिन सांस्कृतिक रूप से स्वायत्त भी**। यही वर्ग अब ब्रांड से अपेक्षा करता है कि वह न केवल **तकनीकी दक्षता** दिखाए, बल्कि **संवेदनशीलता और पहचान की स्वीकृति** भी प्रदर्शित करे।

इसलिए भारत में विपणन प्रबंधन केवल एक **डिजिटल चुनौती** नहीं है — यह एक **संस्कृतिक संवाद** भी है। एक ऐसा संवाद जो तभी सफल होगा जब ब्रांड तकनीक के साथ-साथ **स्थानीय समझ, सांस्कृतिक सहानुभूति और विविधता के प्रति सम्मान** को अपनी रणनीति में समाहित करें।

निष्कर्ष: परिवर्तन की भाषा में नेतृत्व की पुनर्परिभाषा

वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी और समाज का संबंध एक सरल सह-अस्तित्व नहीं, बल्कि एक जटिल, परस्पर गुँथा हुआ संवाद बन चुका है — एक ऐसा संवाद जो नीतियों, नैरेटिव्स और नैतिकताओं को एकसाथ प्रभावित करता है। परिवर्तन अब केवल बाहरी परिस्थिति नहीं, बल्कि आंतरिक अनुशीलन का विषय बन गया है।

विपणन प्रबंधन इस परिवर्तनशील धारा का सिरमौर बन चुका है — एक ऐसा क्षेत्र जहाँ उपभोक्ता की आकांक्षाएँ, तकनीकी नवाचार और सामाजिक जिम्मेदारियाँ एक त्रिकोण की भाँति परस्पर गतिशील हैं। इस त्रिकोण को समझना और साधना ही आज के विपणन नेतृत्व की कसौटी है। एक कुशल विपणन प्रबंधक अब केवल डाटा का विश्लेषक या ट्रेंड का व्याख्याकार नहीं, बल्कि **संवेदनशील सांस्कृतिक अन्वेषक, भविष्यद्रष्टा रणनीतिकार**, और **नैतिक संवादक** है।

यही कारण है कि आज नेतृत्व केवल लक्ष्यों की पूर्ति नहीं, बल्कि संदर्भ की समझ, सामूहिक कल्पना और उत्तरदायित्व के प्रति प्रतिबद्धता बन गया है। परिवर्तन को न केवल मापना, बल्कि उसका मानवीय अर्थ समझना — यही आज के प्रबंधन की सबसे बड़ी परीक्षा और सबसे मूल्यवान योग्यता है।

प्रो. रमेन्द्र प्रताप सिंह
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

समाज, सोशल मीडिया से चैटजीपीटी तक

जब से मुझमें कुछ सोचने समझने की सामर्थ्य आई, मेरी समाज की परिभाषा कुछ नकारात्मक भावनाओं में उलझने लगी थी। अक्सर लोग किसी न किसी मापदंड के पैमाने पर एक दूसरे को मूल्यांकित कर रहे होते। 8-9 साल तक मैं तार्किकता से सोच तो नहीं पाती थी पर गहराई से महसूस करने लगी थी। जहां एक ओर किताबों के प्रति निष्ठा के लिए मुझे सराहा जाता था, वही मेरे रंग-रूप के लिए, मेरे किचन में कोई दिलचस्पी ना होने के लिए ताने भी तैयार रहते थे। मैं बहुत स्पष्ट तरीके से समझ तो नहीं पाती थी, पर मेरे अमीर दोस्तों के मां-बाप मुझे किसी पैमाने पर तौलते हुए महसूस होते थे। धीरे-धीरे मैंने अपनी दुनिया सीमित करनी शुरू कर दी थी। किताबें, परिवार, और कुछ ऐसे लोग जो दूसरों की आलोचना करने के बजाय अपने अनुभव, हास्य, और दार्शनिक विचार साझा करने के लिए जाने जाते थे। थोड़ा समय तो लगा पर समाज के मापदंडों के बीच में मैंने अपनी सोच, अस्मिता, और अपने अंतरात्मा की आवाज के लिए जगह बना ली थी - जहाँ केवल कुछ मापदंड मान्य थे और गिनती के लोगों को ही मूल्यांकन की स्वीकृति थी।

2007-08 तक जब मेरी समाज और अपनी सोच-पहचान के साथ कशमकश चल रही थी, उन दिनों फेसबुक इस्तेमाल करने को लेकर चलन था। मेरी एक दोस्त ने 2009 में जबरदस्ती मेरा अकाउंट बनवाया यह कहते हुए कि कुछ नहीं तो मेरे पोस्ट को ही लाइक करना। यह एक नई जगह थी जहां लोगों के लिए लाइक्स, कमेंट्स, पापुलैरिटी के मापदंड थे। समाज में दैनिक रूप से जहां चौदह-पंद्रह लोग कुछ मापदंडों पर तुलनात्मक विश्लेषण करते हैं, यहां लोग खुद को ही 400 से 500 लोगों के सामने एक इमेज बनाने के संघर्ष में दिखे। कुछ आडंबर सा लगा था मुझे। उस समय मैं अपने अंदरुनी जीवन के हजारों सवालों में उलझी, अपने आप को बाहरी दुनिया से अलग- थलग ही पाया। मेरे पास ना तो बाहरी दुनिया से कुछ कहने को और ना ही कुछ पोस्ट करने को था। मेरे दोस्तों के काफी दबाव के बाद भी मैंने फेसबुक अकाउंट डीएक्टिवेट कर दिया और वापस से मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे बाहरी मापदंडों के ऊपर मेरी पर्सनल एजेंसी अभी भी है।

पर यही पर्सनल एजेंसी यूट्यूब पर आकर लड़खड़ाने लगी। फेसबुक के डिजाइन में कुछ शोर सा था, वही यूट्यूब के डिजाइन में बहुत प्रलोभन है। ऐसे सूक्ष्म प्रलोभन जिससे आप आसानी से संघर्ष नहीं कर सकते। कितनी बार ऐसा होता था कि मैं पढ़ाई से जुड़ा कोई वीडियो देखने जाती और आधे घंटे बाद खुद को बिल्ली के बच्चों के वीडियो को देखती हुई पाती। शुरुआत में तो बड़ा मुश्किल सा लगा पर धीरे-धीरे मैंने काफी तरीके अपनाए। कई तरीकों के विफल होने के बाद मैंने अंत में यूट्यूब के एल्गोरिदम को ही बहकाने का सोचा। मैं जानबूझकर कुछ ऐसे वीडियो देखे, जिनमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी-ताकि जब अगली बार यूट्यूब ऐसा कुछ सुझाए, तो मैं समझ जाऊँ कि अब यूट्यूब से बाहर निकलने का समय है। काफी कशमकश के बाद ऐसा महसूस होने लगा था मुझे कि अब मैं यूट्यूब पर भी विजय पा चुकी हूं।

फिर आई चैटजीपीटी की सुनामी। जिस रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच ने मुझे समाज की संरचना, फेसबुक की चमकती दुनिया और यूट्यूब के आकर्षण में फंसने से रोका, चैटजीपीटी अब उन्हीं सोच का ज्ञाता माना जा रहा है। कुछ समय तक मुझे लगा शायद यह शुरुआती दौर है, समय के साथ यह लहर ठंडी पड़ जाएगी। पर हाल ही में जब हमारे संस्थान द्वारा चैटजीपीटी पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, तब मुझे चैटजीपीटी की प्रगतिशीलता का आभास हुआ। तब मुझे आदिमानव जैसा महसूस हुआ। चैटजीपीटी प्लस, एंटरप्राइज और ऑपरेटर की क्षमताएँ किसी स्तर पर मुझे चौंका गईं। मैंने एक सूक्ष्म डर भी अनुभव किया। डर सिर्फ इसके मौन खिंचाव से ही नहीं, पर उन हजार सवालों से भी है, जिनके उत्तर अभी किसी के पास नहीं है। क्या यह हमारी आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच के विकास को धीमा कर देगी या फिर जो लोग इसे अपनाने में सक्षम होंगे वह असाधारण रूप से आगे बढ़ेंगे? क्या यह कैम्ब्रिज एनालिटिका, फेसबुक और बाकी कंपनियां जैसी या उनसे भी एक विकसित रूप है - जहां अब हम निडर होकर अपने बारे में सब कुछ साझा कर सकते हैं और यह तकनीक हमें बारीकी से समझ कर हमारा एक सटीक मॉडल बनाएगी जो कंस्यूमरिस्ट कल्चर के लिए एक आदर्श ग्राहक साबित होगी? क्या यह तकनीक मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को कुछ हद तक कम करेगी, या किसी अन्य रूप में - जैसे कि मानवीय संवाद को सीमित दिखाकर - हमें अपने ही भीतर सीमित और अलग-थलग कर देगी? जहां समाज, और सोशल मीडिया ने मुझे संघर्ष करना सिखाया, वहीं इस तकनीक में मुझे संघर्ष और पर्सनल एजेंसी की जगह बहुत ही कम दिखती है - बस ढेर सारे सवाल ही रह गए हैं।

प्रो. शालिनी पार्थ
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

एक दिन मोबाइल के साथ

जब सुबह आंख खुली तो मोबाइल आवाज लगा रहा था यह तीसरी बार उसने आवाज लगाई थी हर पांच मिनट के अंतराल पर। जैसे ही मैंने मोबाइल को हाथ में उठाया उसका चेहरा खिल उठा। उसने समय, तारीख, मौसम का हाल-चाल, जन्मदिन, और अनुसूची से जरूरी काम बताएं। फिर हम दोनों सैर पर चल पड़े। हमने संगीत का खूब आनंद उठाया। घर वापस आने के बाद मेरे मोबाइल में मुझे दुनिया भर के समाचार सुनाए। तभी मैंने देखा कि मेरे मोबाइल की ऊर्जा कम हो रही है। मैंने उसको नाश्ते में बिजली परोसी तो उसका चेहरा फिर खिल उठा। मैं दफ्तर जाने की तैयारी में लग गई तो मोबाइल ने याद दिलाया कि मेरे एक मित्र का जन्मदिन है। फिर क्या, मोबाइल ने मेरे दोस्त से मुलाकात करवा दी। बधाई देने के बाद मैं और मोबाइल दफ्तर के लिए निकल पड़े। दफ्तर पहुंचते ही मोबाइल मेज पर अपनी निश्चित जगह पर विराजमान हो गया। दफ्तर में काम का सिलसिला चल पड़ा और मैं उसमें व्यस्त हो गई। उधर मेरा मोबाइल एक वफादार साथी की तरह मेरा इंतजार करता रहा। बीच-बीच में मेरे दोस्तों और परिवार जनों द्वारा भेजी गई मजेदार बातें या चुटकुले भी सुनता रहा। दफ्तर से निकलते ही हम दोनों बाजार जाने के लिए गाड़ी में बैठे। मोबाइल ने पूरे रास्ते गाड़ी चलने में मेरा मार्गदर्शन किया। निर्धारित स्थान पर पहुंचते ही उसने मुझे सामान की सूची पकड़ा दी और आराम से बैठ गया। मैंने सोचा कि काश मेरा मोबाइल समान ढूंढने में भी मेरी मदद कर पाता। जब सामान लेकर वापस जाने को हुई तो पता चला बटुआ घर पर भूल आई हूं। मैंने आराम फरमाते हुए अपने मोबाइल की तरफ देखा... तुम कुछ मदद कर सकते हो? मोबाइल ने कहा... मैं हूं ना। ऐसा जताकर उसने मिनटों में पैसे भर दिए। अब घर पहुंचने में देर हो गई थी। मोबाइल ने तो सुबह ही बिजली का नाश्ता कर लिया था पर मैं तो ठहरी मनुष्य... जिसे तीन बार भोजन चाहिए। मोबाइल ने मेरी चिंता देख स्वादिष्ट भोजन की एक सूची मेरे सामने प्रस्तुत कर दी और मुझे चयन करना था। थोड़े ही समय में मेरा भोजन भी आ गया। भोजन करते समय मोबाइल ने मुझे मेरा पसंदीदा चलचित्र भी दिखाया।

और इस तरह एक चहल-पहल से भरे दिन का अंत हुआ।

मेरा मोबाइल मेरे जीवन में विभिन्न भूमिकाएं निभाता हैं, कभी मेरी घड़ी, कभी कैलेंडर, कभी मौसम विभाग विशेषज्ञ, कभी संवाददाता, कभी मार्गदर्शक, कभी डायरी, कभी विश्व कोश, कभी संदेश वाहक, तो कभी मेरा निजी काउंसलर बनकर।

धन्यवाद।

प्रो. पापरी नाथ
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

मेटावर्स में साइबर नैतिकता, गोपनीयता एवं सुरक्षा के उभरते खतरे तथा नीतिगत समाधान

सार : भारत एक डिजिटल अर्थव्यवस्था के रूप में तेजी से बढ़ रहा है। कोविड-19 महामारी के बाद, जब कंपनियों ने घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) करने की नीति लागू की, तो साइबर सुरक्षा का खतरा और अधिक बढ़ गया तथा साइबर हमलावरों ने देश के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे/क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को निशाना बनाया जो एक गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि व्यक्तियों के डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा दांव पर है। हाल ही में, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एम्स (AIIMS) पर हुए साइबर हमले ने संवेदनशील डेटा के नैतिक प्रबंधन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। बिग बास्केट, एयर इंडिया, डोमिनोज और यहां तक कि एम्स जैसे स्वास्थ्य संस्थानों के डाटा में सेंध जैसे कई उदाहरण हमारे सामने आये हैं जो व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा से जुड़ी नैतिक जिम्मेदारियों को रेखांकित करते हैं। ऐसी स्थितियों में महत्त्वपूर्ण सूचना अवसंरचना/क्रिटिकल इंफॉर्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर, गोपनीयता एवं सुरक्षा के नैतिक आयाम सर्वोपरि हो जाते हैं। यहां पर यह प्रश्न खड़ा होता है कि क्या हम व्यक्तिगत तथा अति संवेदनशील डेटा को अत्यंत सावधानी के साथ संभालने एवं अपने महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए तैयार हैं ? राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के अनुसार, साइबर अपराध के मामलों में तेजी से 111% का उछाल देखने को मिला है। साइबर अपराध दर में वृद्धि, 2019 में 3.3 प्रतिशत से बढ़कर 2020 में 3.7 प्रतिशत हो गई है। हमने इस आलेख में विकसित हो रहे डिजिटल परिदृश्य, मेटावर्स और साइबरस्पेस के द्वैतवाद पर चर्चा की है। इसके अतिरिक्त साइबर हमलों और संबंधित अवधारणाओं की विविध श्रृंखला पर प्राथमिक ध्यान देने के साथ, मेटावर्स के बहुमुखी दृष्टिकोण को व्यापक रूप से संबोधित किया है । आलेख के दायरे में साइबर नैतिकता, डेटा सत्यनिष्ठा व मेटावर्स के उभरते खतरों जैसी चुनौतियों के लिए संभावित नीति एवं सैद्धांतिक समाधान शामिल हैं। लेख में नैतिक सिद्धांतों एवं अवधारणाओं को भी शामिल किया गया है, जो विभिन्न एजेंसियों के लिए साइबर खतरों के बुरे प्रभावों से जुड़े नैतिक परिप्रेक्ष्य की अंतर्दृष्टि को दर्शाता है। अंततः इस लेख का उद्देश्य लगातार बदलते डिजिटल परिदृश्य की गहन समझ प्रदान करना और इसके द्वारा प्रस्तुत असंख्य चुनौतियों के विरुद्ध प्रभावी ढंग से प्रबंधन और सुरक्षा के लिए रणनीतियाँ प्रस्तुत करने का प्रयास है।

1. प्रस्तावना: समकालीन समय में, इंटरनेट हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है और इसका गहरा प्रभाव हमारे दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर पड़ रहा है। इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक, वायरलेस और ऑप्टिकल नेटवर्किंग प्रौद्योगिकियों का व्यापक अंतरजाल है जिसमें निजी, व्यावसायिक, शैक्षिक, सार्वजनिक और सरकारी नेटवर्क शामिल होते हैं, डिजिटल यंत्रों को संबद्ध करने के लिए इंटरनेट प्रोटोकॉल सूट (टीसीपी/आईपी) का उपयोग किया जाता है वहीं दूसरी ओर साइबरस्पेस इंटरनेट की एक आभासी (वर्चुअल) कंप्यूटर दुनिया है, जो कंप्यूटर नेटवर्क के पारंपरिक वातावरण पर कार्य कर रही है। अतएव यह, वह आभासी दुनिया है जो इंटरनेट के माध्यम से मौजूद है। साइबरस्पेस हमें आभासी रूप से दुनिया भर के करोड़ों ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं से जोड़ रहा है और इसके द्वारा हम अनगिनत संवादों को साझा करने की संभव हो पाते हैं। साइबरस्पेस शब्द का पहली बार उपयोग विलियम गिब्सन द्वारा 1984 में उनकी पुस्तक न्यूरोमैंसर में किया गया था (गिब्सन,1984)। साइबरस्पेस एक ऐसा वातावरण होता है जो संगणक या कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से जुड़कर बनता है, जिसमें आपसी संवाद संभव होता है। हालांकि मेटावर्स और साइबरस्पेस शब्द अक्सर एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं, लेकिन उनके अलग-अलग अर्थ और ऐतिहासिक संदर्भ हो सकते हैं। मेटावर्स अपेक्षाकृत हाल ही में विकसित शब्द है जो एक सामूहिक आभासी साझा स्थान को संदर्भित करता है, जिसे आमतौर पर इंटरनेट पर बनाया गया है; जहां उपयोगकर्ता एक दूसरे के साथ और डिजिटल वातावरण में बातचीत कर सकते हैं। इसमें अक्सर आभासी वास्तविकता (वी आर) संवर्धित वास्तविकता (ए आर) और ऑनलाइन सामाजिक संपर्क के विभिन्न रूपों सहित इमर्सिव प्रौद्योगिकियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल होती है। विस्तारित वास्तविकता (एक्स आर) एक समग्र शब्द है जिसके अंतर्गत आगमित या ऑगमेंटेड वास्तविकता (ए आर), आभासी वास्तविकता (वी आर), और मिश्रित वास्तविकता (एम आर), के साथ ही विकसित हो रही सभी नवाचारी प्रौद्योगिकियों को सम्मिलित किया गया है। यह मूल रूप से कंप्यूटर नेटवर्क और इंटरनेट के आभासी क्षेत्र को संदर्भित करता है जहां डेटा, सूचना का संचार होता है, मेटावर्स की तुलना में साइबरस्पेस का अर्थ अधिक ऐतिहासिक और संकीर्ण है। इन शब्दों के उपयोग में कुछ अधिव्यापन अवश्य है, मेटावर्स को अक्सर अधिक उन्नत और व्यापक अवधारणा के रूप में देखा जाता है जिसमें इमर्सिव और अंतर संबंधी डिजिटल स्पेस शामिल होते हैं, जबकि साइबरस्पेस एक व्यापक शब्द है जो इंटरनेट और ऑनलाइन संचार सहित पूरे डिजिटल क्षेत्र को शामिल करता है।

मेटावर्स में, साइबर नैतिकता, डेटा सत्यनिष्ठा, गोपनीयता की चिंताएं और उभरते हुए खतरों के साये ने एक जटिल और गतिशील डिजिटल दृश्य की ओर मार्ग प्रवृत्त किया है। हाल के मामले इन बहुमुखी पहलुओं, चुनौतियों को ज्ञात करने की तात्कालिकता को प्रकट करते हैं। मेटावर्स के तेज विस्तार ने उपयोगकर्ताओं को नैतिक संदेहों के चारों ओर वास्तविक दुनिया की दुविधाओं की तरह आपसी बातचीत के लिए के प्रेरित किया है, गोपनीयता उल्लंघन, जैसे 2018 में हुई फेसबुक-कैम्ब्रिज एनालिटिका जैसी घटनाएं, डिजिटल मौजूदगी के साथ आने वाली कमजोरियों को अवगत कराती हैं और बढ़ी गोपनीयता संरक्षण की आवश्यकता को दर्शाती हैं (न्यू यॉर्क टाइम्स, 2018)। हालांकि, इन चुनौतियों के बीच,

नवाचारक समाधान भी उद्भूत हो रहे हैं। उपयोगकर्ताओं को, मेटावर्स में उभरते हुए खतरों से सुरक्षित रखने के लिए मजबूत एन्क्रिप्शन और गोपनीयता-मुख युक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका आवश्यक है। इस आलेख में हम मेटावर्स के बहुमुखी दायरे पर चर्चा करेंगे, विभिन्न प्रकार के साइबर हमलों और संबंधित अवधारणाओं और इसके प्रकारों और सूक्ष्मता तथा व्यापकता पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो व्यक्ति विशेष और समाज को प्रभावित कर रहे हैं। हमारे दायरे में साइबर नैतिकता, डेटा सत्यनिष्ठा एवं मेटावर्स में उभरते खतरों के लिए संभावित नीति तथा सैद्धांतिक समाधान शामिल हैं। आलेख का लक्ष्य डिजिटल अस्तित्व के गतिशील परिदृश्य और इसके द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों से निपटने के साथ-साथ और सुरक्षा के लिए रणनीतियों की जानकारी प्रदान करना है।

2. प्रमुख प्रकार के साइबर खतरे तथा संलग्न घटनाएं:

साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में, साइबर खतरों के विविध परिदृश्य को समझने और संबोधित करने के लिए विस्तृत शब्दावली महत्वपूर्ण हैं। जैसे कि क्लिकजैकिंग, जो दुर्भावनापूर्ण समूह या व्यक्ति विशेष द्वारा इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को हानिकारक सॉफ़्टवेयर के साथ छिपने वाले लिंक के जरिये बातचीत करने या अनजाने में उनकी निजी जानकारी को सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर साझा करने व लुभाने के लिए नियोजित एक भ्रामक रणनीति है उदाहरण के लिए, हमलावर उपयोगकर्ताओं को सहज प्रतीत होने वाले लिंक पर क्लिक करने के लिए क्लिकजैकिंग तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं, जिससे अंततः मैलवेयर की स्थापना हो सकती है और उपयोगकर्ता के सिस्टम से समझौता हो सकता है। इसके अतिरिक्त रैनसमवेयर जो एक बहुत प्रसिद्ध और जोखिमी सॉफ़्टवेयर है जो कंप्यूटर के डेटा को जब्त कर लेता है और इसके बदले में आमतौर पर बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी में फिरौती की मांग करता है (वॉन सोल्म्स और वैन नीकेर्क, 2014)। 2017 में व्यापक WannaCry रैंसमवेयर हमले ने वैश्विक स्तर पर संगठनों को प्रभावित किया, जो इस साइबर खतरे की विघटनकारी और वित्तीय रूप से प्रेरित प्रकृति को रेखांकित करता है (अकबानोव ,2019)। स्पाइवेयर, इसके विपरीत, उपयोगकर्ता की कंप्यूटर गतिविधि पर गुप्त रूप से नज़र रखने, कीस्ट्रोक और ब्राउज़िंग इतिहास सहित संवेदनशील जानकारी एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किए गए गुप्त मैलवेयर को संदर्भित करता है, जिससे व्यक्तिगत गोपनीयता और डेटा सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा होता है। ज़ीरो डे वल्नेरेबिलिटी एक साइबर सुरक्षा की चुनौतीकारी समस्या है, जिसमें किसी मशीन, नेटवर्क, ऑपरेटिंग सिस्टम या ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर में ऐसा दोष होता है जिसकी जानकारी उसके डेवलपर द्वारा नहीं होती है और इसके उपयोगकर्ताओं के लिए एक सुरक्षा खतरा पैदा हो जाता है। यह साइबर आक्रमणकारियों के लिए एक अवसर पैदा करता है क्योंकि वे इसका दुरुपयोग कर सकते हैं और संबंधित सिस्टम या ऐप्लीकेशन को हानि पहुँचा सकते हैं, जिससे साइबर सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनता है (अली,एस. एवं अन्य 2022)। कुख्यात स्टक्सनेट वर्म, जिसने औद्योगिक नियंत्रण प्रणालियों को अपना लक्ष्य बनाया, जिसने महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे में घुसपैठ और हेरफेर करने के लिए ज़ीरो डे वल्नेरेबिलिटी का कुशलतापूर्वक लाभ उठाया। इसके अलावा, मैन-इन-द-मिडिल (मिटएम) हमले जोकि दो पक्षों के बीच पारगमन के दौरान संदेशों को रोकने के लिए नियोजित एक विधि है, जिससे संवेदनशील डेटा तक अनधिकृत पहुंच की सुविधा मिलती है, सार्वजनिक वाई-फाई नेटवर्क में, साइबर अपराधी उपयोगकर्ताओं और उनके इच्छित गंतव्यों के बीच डेटा के आदान-प्रदान पर नजर रखने के लिए एमआईटीएम जैसी तकनीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं, जिससे संभावित रूप से व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी से समझौता हो सकता है। अन्य महत्वपूर्ण हमला डिनायल ऑफ सर्विस (डीओएस) जो एक साइबर कृत्य है जिसमें हमलावर किसी विशेष सेवा, वेबसाइट, या ऑनलाइन सेवा को बाधित करने का प्रयास करता है, जिसके फलस्वरूप वेबसाइट सेवा को इच्छित समय तक बाधित करने के लिए अस्थायी रूप से अधिक लोड किया जाता है।

3. साइबर-नैतिकता, डेटा- सत्यनिष्ठा एवं गोपनीयता पर एक नज़र:

जैसे कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि साइबर नैतिकता, डेटा उपयोग की सत्यनिष्ठा, सुरक्षा के नवीन खतरों की आशंका और गोपनीयता संबंधी चिंताओं के परिणामस्वरूप मेटावर्स में एक जटिल तथा गतिशील डिजिटल वातावरण ने जन्म लिया है। जब हम साइबरस्पेस नीति पर चर्चा करते हैं, तो यह पूरी तरह से हमलावरों के दृष्टिकोण से जुड़ी नहीं होती है; बल्कि, इसमें कई हितधारक शामिल हैं। यहां उपयोगकर्ता सबसे कमजोर पक्ष के रूप में सामने आता है। उनके डेटा से न केवल हमलावरों द्वारा बल्कि नेटवर्किंग अभिनेताओं (एक्टर) द्वारा भी समझौता किया जाता है। मौजूदा दौर में इन खतरों से बचना चुनौतीपूर्ण है। अन्ततः उपयोगकर्ता डिजिटल शोषण का शिकार होते हैं, क्योंकि उनके व्यक्तिगत डेटा को तीसरे पक्ष की संस्थाओं द्वारा मुद्रीकृत किया जा सकता है, फलतः गोपनीयता का हनन होना स्पष्ट हो जाता है। एक आवश्यक विचार यह है कि कई व्यक्ति अक्सर इस बारे में अनजान होते हैं कि जब वे नेटवर्किंग अभिनेताओं के नियमों और शर्तों को स्वीकार करते हैं तो उनका डेटा बेचा जा सकता है। यह संभावना इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि इन नियमों और शर्तों तथा गोपनीयता नीतियों में काफी जटिल कानूनी शब्दावली का उपयोग किया जाता है जिसके कारण उपयोगकर्ता को पढ़ना मुश्किल लग सकता है। साइबर-नैतिकता की सीमाओं का उल्लंघन करने के अन्य अधिक प्रसिद्ध उदाहरण हो सकते हैं जो एक उपयोगकर्ता के संपूर्ण भविष्य को खतरे में डाल सकते हैं। दृष्टांत के लिए सॉफ़्टवेयर चोरी होने की दशा में, सॉफ़्टवेयर निर्माता को उनकी आय से वंचित होना पड़ता है। सॉफ़्टवेयर चोरी का उपयोगकर्ता पर तत्काल प्रभाव पड़ता है। अवैध स्रोत से डाउनलोड किये गए तथा पायरेटेड सॉफ्टवेयर, जिसमें गुप्त रूप से मैलवेयर, खतरनाक कंप्यूटर प्रोग्राम, वायरस तथा वर्म्स से छिपे हो सकते हैं, जो कंप्यूटर की हार्ड ड्राइव को स्थायी रूप से नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ डाटा लीक करने में भी सक्षम होते हैं, जिससे उपयोगकर्ता की गोपनीयता भंग हो सकती है। सद्गुण का सिद्धान्त (वर्च्यू एथिक्स) के दृष्टिकोण से, पायरेटेड सॉफ़्टवेयर डाउनलोड करना ईमानदारी, सत्यनिष्ठा

और जिम्मेदारी की कम आपूर्ति के प्रतिबिंब के रूप में देखा जा सकता है। यह ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और कानून के प्रति सम्मान के गुणों के विरुद्ध है। उपयोगकर्ता के संदर्भ में कई कृत्य शामिल हैं जैसे अनैतिक डाउनलोडिंग, साहित्यिक चोरी (प्लजेरिज़्म) जिसमें सद्गुण नैतिकता के अलावा कई नैतिक सिद्धांत लागू हो सकते हैं जैसे परिणामवाद (कांसक्वेनटलिज़्म) है जो किसी कार्रवाई के परिणामों से संबंधित है, इससे नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं, जैसे सॉफ्टवेयर डेवलपर्स के लिए राजस्व और डेवलपर/मूल लेखक के अधिकारों की रक्षा हानि के अतिरिक्त अन्य संभावित कानूनी परिणाम भी सम्मिलित हैं। अधिकार-आधारित नैतिकता, जैसा कि जॉन रॉल्स जैसे दार्शनिकों द्वारा समर्थित है, व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा (डेवलपर/मूल लेखक के परिप्रेक्ष्य में) के महत्व पर जोर देती है और डीओन्टोलॉजी जो विशेष रूप से कांटियन नैतिकता आचार है जो कर्तव्य और नैतिक नियमों, उदाहरण के तौर पर संपत्ति के अधिकारों का सम्मान करना और दूसरों को साध्य का साधन न मानने का सिद्धांत पर बल देती है। वहीं दूसरी ओर सेवा और नेटवर्क प्रदाताओं को उपयोगकर्ता के डेटा के प्रति संवेदनशील होने की आवश्यकता है। प्रदाताओं को उपयोगकर्ता की गोपनीयता और डेटा की सुरक्षा के लिए देखभाल (एथिक्स ऑफ केअर) जो व्यवसाय के प्रति एक देखभालपूर्ण नैतिक दृष्टिकोण इस मायने में विशिष्ट है कि यह पारस्परिक दृष्टिकोण रखता है परस्पर निर्भरता और सहयोगात्मक संबंधों को सत्तामूलक रूप से मौलिक माना गया है। उपयोगितावाद (यूटिलिटेरियनिजम) आचार जिससे सामंजस्यपूर्ण संबंध को बढ़ावा मिलता है, जिम्मेदार डेटा प्रबंधन, उपयोगकर्ता की गोपनीयता और सूचित सहमति को प्राथमिकता देना अंततः प्रदाता या कंपनी के हितों को उपयोगकर्ता की भलाई के साथ संरेखित करता है। संविदावाद/सामाजिक अनुबंध (कॉन्ट्रैक्टेरियनिज़्म/सोशल कॉन्ट्रैक्ट) सिद्धांत जिसे कंपनियों को अपने उपयोगकर्ताओं के साथ सामाजिक अनुबंध में भागीदार के रूप में देखा जाता है। डेटा गोपनीयता और सुरक्षा इस अनुबंध में अंतर्निहित शर्तें हैं और कंपनियों को उपयोगकर्ता के डेटा की सुरक्षा करके अपना अवयव पूर्ण करते हुए उपर्युक्त सिद्धांतों का पालन करने की आवश्यकता है।

4. साइबर स्पेस में सुरक्षा हेतु नवीनतम चुनौतियाँ एवं आवश्यक समाधानः

साइबर सुरक्षा के मामले में भारत ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है, आईटीयू (इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन) द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत वैश्विक साइबर सुरक्षा सूचकांक (जीसीआई 2020) में 37 स्थानों की छलांग लगाकर 10वें स्थान पर पहुंच गया है परन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका के संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) की एक नई रिपोर्ट के अनुसार जो एफबीआई के इंटरनेट अपराध शिकायत केंद्र (IC3) से आती है, उससे पता चला है कि दुनिया भर में साइबर अपराध के पीड़ितों के मामले में भारत शीर्ष बीस देशों में से एक है (एफबीआई 2022)। साइबर सुरक्षा के उभरते खतरों से निपटने के लिए इकट्ठी भागीदारी सर्वोपरि है। हमें साइबर सुरक्षा हेतु एक पारिस्थितिकी तंत्र को अपनाना होगा, सटीक और बेहतर सहयोग के लिए विभिन्न मंत्रालयों को बुनियादी ढांचे को विकसित करने और फोरेंसिक, पुलिस, डीआरडीओ, भारतीय डेटा सुरक्षा परिषद (DSCI) भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम, (CERT-In) तथा नेशनल क्रिटिकल इंफॉर्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोटेक्शन सेंटर (एनसीआईआईपीसी) जैसे कई क्षेत्रों की क्षमता बढ़ाने के लिए साथ आना होगा। आज का समय, व्यक्तिगत साइबर खतरे की प्रमुख चुनौतियों से निपटने के लिए जन जागरूकता और डेटा गोपनीयता जैसे खतरे को न्यून करने के लिए व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक को पारित करने की अनिवार्यता की ओर इंगित करता है। इसके अलावा साइबर सुरक्षा के लिए एक अलग बजट आवंटित करने और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के कामकाज का ऑडिट करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सूचकांक विकसित करने की आवश्यकता है। हमारे पास रक्षा, परमाणु ऊर्जा संयंत्र, शेयर बाज़ार, सरकारी खाते के अतिरिक्त चिकित्सा संस्थानों की सुरक्षा करने की प्रमुख चुनौती है क्योंकि कोविड-19 के बाद चिकित्सा आंकड़े डिजिटल बुनियादी ढांचे के अंतर्गत होने के कारण वे हमलावरों के लिए नेटवर्क और डेटा के महत्वपूर्ण लक्ष्य बन गए हैं। हमलावरों ने चिकित्सा संस्थानों की महत्वपूर्ण निर्भरता पर पर निशाना साधा है। यहां भारत के लिए यह आवश्यक है कि सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 70(1) (आईटी एक्ट 2000), के अनुसार अन्य देशों की तरह महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना (सीआईआई) में चिकित्सा क्षेत्र की जानकारी को भी शामिल किया जाए। साइबर आतंकवाद को रोकने के लिए हमें अभी भी सर्वर और उपकरणों के लिए उच्चतम साइबर सुरक्षा मानकों को विकसित करने की आवश्यकता है और यदि कुछ गलत होता है तो एक बेहतर पुनर्प्राप्ति योजना बनाने की आवश्यकता है। इसमें समय-समय पर ऑडिट की भी अपेक्षा होनी चाहिए जो भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम, सर्ट-इन CERT-In द्वारा अनिवार्य है।

5. उपसंहार/निष्कर्षः

हालाँकि हम नवीनतम प्रयासों में देखें तो भारत सरकार ने 2013 में अपनी राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति जारी की थी। भारत ने साइबर स्वच्छता केंद्र, राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल, साइबर सुरक्षित भारत और भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) का उद्घाटन भी किया है। आज के समय में राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति 2020 के बेहतर क्रियान्वयन के लिए ऑडिट और विशेष रूप से बच्चों में साइबर जागरूकता फैलाने की महती आवश्यकता है। हमें त्रुटियों का पता लगाने के लिए एक स्तरवार प्रणाली विकसित करनी होगी, जिसके लिए तकनीकी संस्थानों को अनुसंधान और विकास के लिए आगे आना होगा। हमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए विभिन्न एजेंसियों जैसे अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक पुलिस संगठन (इंटरपोल), सरकारी विशेषज्ञों का समूह (जीजीई) और संयुक्त राज्य अमेरिका के काउंटर रैनसमवेयर इनिशिएटिव (सीआरआई), संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई), आदि के साथ मिलकर कार्य करना होगा।

संदर्भ:

अकबानोव, मक्सात और वासिलाकिस, वासिलियोस (2019). WannaCry रैंसमवेयर: संक्रमण, स्थायिता, पुनर्प्राप्ति प्रतिष्ठापन और प्रसारण तंत्र में विश्लेषण. दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी पत्रिका. 1. 113-124. 10.26636/jtit.2019.130218।

अली, एस. एवं एस., रहमान, एस. यू., इमरान, ए., अदीम, जी., इकबाल, ज़., और किम, के-आई. (2022). जीरो-डे हमलों की पहचान के लिए एआई-आधारित तकनीकों का तुलनात्मक मूल्यांकन. इलेक्ट्रॉनिक्स, 11(23), 3934. MDPI AG. http://dx.doi.org/10.3390/electronics11233934 से प्राप्त किया गया।

इंटरनेट अपराध रिपोर्ट (2022) फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन, पृष्ठ 19।

गिब्सन विलियम, 1948-(1984) न्यूरोमैंसर. न्यू यॉर्क: एस साइंस फिक्शन बुक्स।

न्यूयॉर्क टाइम्स। (2018) “फेसबुक-कैम्ब्रिज एनालिटिका डेटा स्कैंडल: विश्वास और गोपनीयता का उल्लंघन।” दी न्यू यौर्क टाइम्स।

रीड, रेन और वैन निकर्क, जोहान. (2014) सुरक्षा से साइबर सुरक्षा: संगठन से समाज तक।

वैश्विक साइबर सुरक्षा सूचकांक (जीसीआई), अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू), 2020।

भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000।

पारिभाषिक शब्दावली:

1. महत्त्वपूर्ण सूचना अवसंरचना/क्रिटिकल इंफॉर्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर (सीआईआई): सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 70(1) के अनुसार, “महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना” का अर्थ वे कंप्यूटर संसाधन है, जिसके अक्षम होने या नष्ट होने से राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक स्वास्थ्य या सुरक्षा पर दुर्बल प्रभाव पड़ेगा।

2. साइबर नैतिकता: साइबरनैतिकता उन आदर्शों, नैतिकता और शिष्टाचार को परिभाषित करती है जिन्हें कंप्यूटर सिस्टम का उपयोग करते समय उपयोगकर्ता द्वारा आत्मसात किया जाना चाहिए।

अन्य सूची:

1. इंटरनेट क्राइम कंप्लेंट सेंटर (आईसी 3)
2. इंटरनेशनल क्रिमिनल पोलीस आर्गेनाइजेशन (इंटरपोल)
3. इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम (सीईआरटी-इन)
4. इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (आई4सी)
5. ग्रुप ऑफ गवर्नमेंटल एक्सपर्ट्स (जीजीई)
6. डेटा सिक्योरिटी कौंसिल ऑफ इंडिया (डीएससीआई)
7. फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई)
8. नेशनल क्रिटिकल इनफॉर्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोटेक्शन सेंटर (एनसीआईआईपीसी)

अनिकेत सचान
शोधार्थी, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

परिवर्तन की परिभाषाः प्रौद्योगिकी और समाज

इस संसार में एक ही प्रक्रिया नियत है, 'परिवर्तन': 'परिवर्तनमेव स्थिरमस्ति'। किसी भी क्षेत्र में, किसी भी रूप में, किसी भी स्तर पर यह प्रक्रिया अविराम गति से आगे बढ़ती जाती है। मानव के विकसित मस्तिष्क - विचार, कल्पना, निर्णय और स्मृति की क्षमता - की यह उपलब्धि है कि इस परिवर्तन को हम दिशा दे सकते हैं, विकास में बदल सकते हैं।

कौन ऐसा व्यक्ति है जो विकास नहीं चाहता? जिसकी जिसमें रुचि है, उस क्षेत्र में आगे बढ़ना और कुछ पाना प्रत्येक विकासोन्मुख व्यक्ति का लक्ष्य होता है और होना चाहिए। समाज भी - जो व्यक्ति, विचार और व्यवहार की समष्टि है - उसके सदस्यों की भावना के अनुरुप अपनी दिशा चुनता है।

परिवर्तन के बीज को रोपने, पुष्पित - पल्लवित करने के लिए एक उपजाऊ भूमि की अपेक्षा होती है। या यूँ कहूँ कि गति - प्रगति और ह्रास - का मूल्यांकन करने के लिए एक प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है। मानव को यह वरदान है, उसे ऐसी भूमि और प्रयोगशाला सहज रूप में उपलब्ध होती है।

समाज 'सम' की भावना का द्योतक है -

एक अकेला व्यक्ति परिवर्तन चाहता है; वह स्वयं को परिवर्तित कर भी लेता है, किन्तु उसे इससे सन्तुष्टि नहीं मिलती। क्योंकि समाज में कोई विशेष बदलाव नहीं होता, उस व्यक्ति को हार्दिक अन्तस्तोष नहीं मिलता। समय आता है- व्यक्ति-व्यक्ति की भावना बदलती है, मुखर होने लगती है, उसकी विश्लेषक - अन्वेषणात्मक शक्ति उसे परिष्कार की ओर ढकेलती है। एक जैसे विचारों का मिलन एक वैचारिक समाज का निर्माण करता है। इस एकत्व की शक्ति से परिपूर्ण समाज बनता है परिवर्तन की उर्वर भूमि । उस समाज के प्रत्येक अवयव की भावना उस भूमि के कण-कण में सिंचन-शक्ति का संचरण करती है।

संक्रमण और क्रांति

समय मूल्यवान है, बलवान है। वह हमारी कर्तव्य-धारा को मोड़ सकती है और कर्मफल को भी प्रभावित कर सकती है। इतिहास को विभिन्न संक्रमण काल में विभक्त किया जा सकता है। संक्रमण काल परिवर्तन का द्योतक है। उसमें पुराने मूल्यों का त्याग और नये मूल्यों का स्वीकरण होता है। मूल्यों के साथ संस्कृति बदलती है। अठारहवीं शताब्दी की क्रान्ति एक महत्त्वपूर्ण संक्रमण का आरम्भ थी। समाज ने परिवर्तन का निर्णय किया और कुछ समय पूर्व तक उसने वापस मुड़कर नहीं देखा।

साधन

संक्रमण काल की एक विशेषता निर्माण है। कुछ भौतिक साधनों का आविष्कार होता है जो समाज की कार्य-प्रणाली को प्रभावित करते हैं। हम नवीनतम संक्रमण का विश्लेषण करेंगे तो हमारे सामने एक ही साधन सर्वोपरि होगा- प्रौद्योगिकी। प्रत्येक सामाजिक इकाई - आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक और परिवारिक एवं व्यक्ति स्वयं- इससे प्रभावित हुए है, आगे बढ़े हैं। उपभोक्तावाद की संस्कृति आगे बढ़ी है। उत्पाद और व्यय की क्षमता विकसित हुई है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस 'प्रौद्योगिकी' नामक यंत्र ने-

हमें जोड़ा और तोड़ा

इसने हमारे रास्ते को मोड़ा

और हमारी सारी सामाजिक संरचना को ही बदल डाला!

टेलीग्राम और दूरसंचार के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा तक, हस्त/चतुष्पद चलित वाहनों से बुलेट ट्रेन तक, तीरों और भालों से मिसाइल और परमाणु हथियारों तक, अपने खेत के कोने से अंतरिक्ष की सैर तक और अपने विचारों की भूल-भुलैया से दूसरों के विचारों के साथ तादात्म्य स्थापित करने तक प्रौद्योगिकी साधन के रूप में हमे काफी दूर ले आया। कुछ मायनों में मानव-मस्तिष्क की उपज मानव पर ही हावी होती दिखाई पड़ती है।

सीमा, सिंघावलोकन, सुनिर्माण

यहाँ मैं इस साधन की कुछ सीमाओं को प्रकाशित करना चाहता हूँ। मानव संसाधन प्रबन्धन का शिष्य होने के नाते मेरे लिए यह सीमा द्विविध है-कुछ साधन की है, कुछ उपभोक्ताओं की है। रामधारी सिंह 'दिनकर' रचित 'अभिनव मनुष्य' की ये पंक्तियाँ मेरी भावना का निदर्शन करती हैं:

"आज की दुनिया विचित्र, नवीन

प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन!

हैं बंधे नर के करों में वारि, विद्युत, भाप

हुक्म पर चढ़ता उतरता है पवन का ताप।

है कहीं बाकी नहीं व्यवधान

लाँघ सकता नर सरित् - गिरि - सिन्धु एक समान!

....

किन्तु है बढ़ता गया मस्तिष्क ही निःशेष

छूट कर पीछे गया है रह हृदय का देश!

....

हाय रे मानव, नियति का दास!

हाय रे मनुपुत्र अपना आप ही उपहास।

प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत

सिन्धु से आकाश तक सब को किये भयभीत !

....

बुद्धि के पवमान पर उड़ता हुआ असहाय

जा रहा तू किस दिशा की ओर हो निरुपाय?"

हम साधनों का अविष्कार करते हैं, प्रयोग-उपयोग करते हैं तब तक आपत्ति नहीं। जब वे ही साधन हम पर हावी होने लगें, हम उनके दास बनने लगें, उन पर इतना निर्भर हो जाएं कि हमारी मानवता का ही ह्रास होने लगे, तब पुनः परिवर्तन की अपेक्षा उभर आती है।

और यह दृग्गोचर है- युवा पीढ़ी सोच रही है कि प्रौद्योगिकी को साधन मात्र नहीं, उपकरण मात्र नहीं, अपितु एक जागरूक साधन के रूप में कैसे उपयोग में लाया जा सकता है। हम परिवर्तन की अपेक्षा और उसका मूल्य समझते हैं। हममें ठहराव के प्रति भी चाह है। निर्माण, उपचार और संहार की शक्ति जो हममें निहित है, अपेक्षा है उसके सचेत उपयोग की। सिंहावलोकन और परिष्कार की। भारतीय भावना से कहूँ तो 'बेहतरीन विकास' की, सुनिर्माण की।

सुजय कुमार चोरारिया
एम बी ए

पलायन और भाषा

पलायन या प्रवास करने के अनेक कारण होते हैं। इनमें से मुख्य हैं :

'आजीविका या पढ़ाई के लिए बेहतर अवसर, जैसे कि लोग एक राज्य से दूसरे राज्य में जाते हैं।

तनाव, मजबूरी जैसे कि मूल स्थान पर अधिक बेरोज़गारी, त्रासदी, विभाजन, या लॉकडाउन जैसी घटना।'

रोचक बात यह है कि महिलाओं में पलायन का मुख्य कारण विवाह सम्बन्धित होता है। परन्तु पुरुषों में पलायन का मुख्य कारण रोज़गार से सम्बन्धित होता है। पलायन के सन्दर्भ में भाषा की क्या भूमिका है? विशेषतः यदि आप किसी ऐसे स्थान में प्रवास कर रहे हैं, जहाँ की भाषा और लिपि आपकी मातृभाषा से बहुत अलग हो, तो आपको समायोजन में अधिक समय लग सकता है। ऐसे में आप पुनः अपने पलायन के निश्चय पर संदेह भी कर सकते हैं। यहाँ पर श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी की कविता 'एक बूँद' का उल्लेख करना उपयुक्त होगा। इसमें वह बताते हैं कि एक बूँद जब बादल को छोड़ती है, जो कि उसका आरामदायक निवास है, तो वह अपने भाग्य को लेकर कितनी अनिश्चित है।

"देव मेरे भाग्य में है बदा
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में
या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में"

तब अक्सर होता है जब आप पहली बार घर के बाहर कदम रख रहे हों, खासकर यदि आप विद्यार्थी हों। ऐसे में इसी कविता की अंतिम चार पंक्तियां मन को प्रोत्साहन देती हैं।

"लोग यों ही हैं झिझकते सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किंतु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।"

पलायन एवं प्रवास का एक महत्वपूर्ण सूचक है भाषा। भारत की जनगणना (2011) में मातृभाषा के बारे में सूचना है। इन आंकड़ों के अनुसार, महाराष्ट्र जो कि एक मुख्य पलायन केन्द्र है, वहाँ पर 70% लोगों की मातृभाषा मराठी है और 30% लोगों की अन्य मातृभाषा है। इसमें प्रमुख योगदान मुंबई जिले का है। वहाँ पर मात्र 35% जनसंख्या की मातृभाषा मराठी है। इसी प्रकार तमिलनाडु में 88% लोगों की मातृभाषा तमिल है। चेन्नई में 78% और तिरूचिरापल्ली जिले में 96% लोगों की मातृभाषा तमिल है। किसी भी क्षेत्र में मातृभाषाओं की विविधता इस तथ्य का सूचक है कि वह क्षेत्र भूतकाल या वर्तमान में पलायन का केंद्र रहा है। इस विविधता का प्रभाव क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर भी होता है।

आप यदि प्रवासीय हैं, तो यह एक उत्तम अवसर है नई भाषा सीखने का। जैसा कि हमारे निदेशक, डॉ पवन कुमार सिंह कहते हैं :

"सम्भव हो तो प्रत्येक भारतीय को 7 भाषाओं को जानने का प्रयास करना चाहिए— मातृभाषा, हिंदी, संस्कृत, अन्य भारतीय भाषा, अंग्रेजी, अन्य विदेशी भाषा तथा प्रेम की भाषा।"

प्रो. वासवी भट्ट
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

गुरुकुल में श्रीकृष्ण ने क्या सीखा?

श्रीकृष्ण, बलराम, सुदामा और अन्य विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए पहुँच जाते हैं अवंतिका क्षेत्र में गुरु सान्दीपनी के पास। श्रीकृष्ण और बलराम ब्रज क्षेत्र से पहुँचे थे, तो सुदामा आए थे गुजरात के पोरबन्दर क्षेत्र से। गुरु के आश्रम में ही पल्लवित होती है जगतप्रसिद्ध श्रीकृष्ण-सुदामा की मित्रता। शिक्षा पाने को आतुर सभी शिष्यों को गुरु सान्दीपनी शिक्षा प्रदान करते हैं।

गुरु सान्दीपनी मुख्यतः दो प्रकार की शिक्षा प्रदान करते हैं। प्रथम प्रकार की शिक्षा में ब्रह्म-विषयक विद्या, आत्म-विषयक विद्या एवं दर्शनशास्त्र की विद्या प्रदान की जाती है। इसमें कुल 14 विद्याएँ प्रदान की जाती हैं जिसमें चार वेद, छः वेदांग, पुराण, मीमांसा, तर्कशास्त्र एवं धर्मशास्त्र की शिक्षा दी जाती है। चार वेदों में ऋग्वेद (अस्तित्त्व के ऊर्जा स्रोतों की प्रधानता), यजुर्वेद (यज्ञ एवं ज्यामिति की प्रधानता), सामवेद (वेदमन्त्रों के संगीतमय गान की प्रधानता) एवं अथर्ववेद (औषधीय विज्ञान की प्रधानता) की शिक्षा दी जाती है। वेदों को समझने के लिए पहले वेदांग की शिक्षा दी जाती है। वेदांग की पढ़ाई में सन्निहित हैं - शिक्षा (उच्चारण), व्याकरण, निरुक्त (शब्दों की संरचना एवं उनका अर्थ निरूपण), कल्प (यज्ञ व कर्मकांड के नियम), छन्द तथा ज्योतिष।

दूसरे प्रकार की शिक्षा में, गुरु के आश्रम में श्रीकृष्ण 64 कलाएँ सीखते हैं। ये कलाएँ विभिन्न जागतिक कार्यों को कुशलता से सम्पन्न करने में सहायक होती हैं। जगत में सभी प्रकार के कार्यों की आवश्यकता होती है तथा कोई कार्य अपने आप में बड़ा या छोटा नहीं होता। किसी कार्य की मर्यादा इसमें है कि वह कार्य कितनी कुशलता से सम्पन्न किया जाता है।

श्रीकृष्ण ने विजय हेतु विभिन्न प्रकार के युद्धकौशल सीखे। इसी सन्दर्भ में हाथियों को नम्र बनाकर प्रशिक्षित करने की कला सीखी। व्यायामिकी द्वारा सौष्ठव निर्माण तथा स्वयं एवं अन्य की सुरक्षा के गुर सीखे। राज्य की सुरक्षा एवं राजकाज के कार्यों के कुशल निष्पादन हेतु गुप्त भाषा एवं क्षेत्र के बाहर की भाषाओं के प्रयोग सीखे।

कृषि एवं बागवानी की कुशलता सीखी। यन्त्रों के निर्माण सीखे। धातुओं एवं मणियो से सम्बन्धित विज्ञान सीखा। बर्तन व आभूषण पर मीनाकारी की सजावट सीखी। बच्चों द्वारा उपयोग हेतु खिलौने इत्यादि को बनाना सीखा।

स्मरणशक्ति को बढ़ाने की कला के साथ उन्होंने सीखा भाषाई ज्ञान जिनमें सम्मिलित हैं - शुद्ध वाचन, कठिन शब्दों की स्पष्ट तर्जनी, नाटकीय कौशल, कथोपकथन की कला, अक्षरों से शब्दों का निर्माण, कवित्व कौशल, सुनी हुई बात को छन्दबद्धता के साथ प्रस्तुत करना एवं शब्द भंडार का वर्द्धन करना।

दैनन्दिन कार्यों को सम्पन्न करने के लिए कई प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है। कई अन्य व्यक्ति इन कौशलों के आधार पर अपनी आजीविका भी चलाते हैं। इस सन्दर्भ में श्रीकृष्ण ने सीखा पाकशास्त्र की कला, शर्बत एवं मिठाइयाँ बनाने की कला। इसके अलावा वस्त्र निर्माण, वस्त्र साजसज्जा, वस्त्र के विभिन्न प्रकार से उपयोग करने की कला, मस्तक की साजसज्जा, कानों की सजावट, इत्र निर्माण, आभूषण निर्माण, क्रीम एवं तेल निर्माण इत्यादि। भवन निर्माण हेतु सीखी वास्तुविद्या। लकड़ी के सामान बनाने के उपाय तथा खटिया और कुर्सी बीनने की कला सीखी। कई प्रकार के हस्तकौशलों में श्रीकृष्ण ने सीखा - पुष्पों की माला बनाना, पुष्पों द्वारा विभिन्न प्रकार की सजावट, सुन्दर अल्पनाओं का निर्माण, फर्श का सौन्दर्यीकरण, शयनकक्ष की व्यवस्था इत्यादि।

उन्होंने मनुष्यों को आनन्द प्रदान करने वाली कुशलता सीखी, जैसे गायन, वाद्ययन्त्रों का संचालन जिनमें वीणा व संघात वाले वाद्ययन्त्रों का बजाना, जलतरंगों से संगीत का निर्माण, नृत्य, चित्रकारी इत्यादि। पक्षियों को प्रशिक्षण देना तथा मनोविनोद हेतु जलक्रीड़ा के खेल को सीखा।

यदि वर्तमान भारत के सन्दर्भ में हम देखें तो हमारी शिक्षा नीति एवं इन नीतियों पर होनेवाले विचार-विमर्श व्यक्तित्त्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा, उच्च गुणवत्ता की शिक्षा, तकनीकि-परक शिक्षा, भाषाई सुदृढ़ता युक्त शिक्षा, कौशल-परक शिक्षा, कृषि-वस्त्र-भवन निर्माण एवं सभी क्षेत्रों में उद्यमिता को विकास करने वाली शिक्षा, यन्त्रनिर्माण में आत्मनिर्भरता-परक शिक्षा, जीवन को गुणवत्ता प्रदान करने वाले कौशल, प्रौद्योगिकी तथा सेवा के क्षेत्रों में अधिकाधिक अवसर, एवं बहुविषयक शिक्षा पर बल देते हैं। श्रीकृष्ण के समय की शिक्षा की सर्वांगीनता से हम बहुत-कुछ सीख सकते हैं।

डॉ. पवन कुमार सिंह
निदेशक, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

संस्थान में हिंदी की प्रगति

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। संस्थान में राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित अनुपालन किया जाता है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशानिर्देशों के अनुरूप संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के वार्षिक कार्यक्रमों में निर्धारित लक्ष्यों को दृष्टिगत रखते हुए संस्थान में समग्र हिंदी कार्यान्वयन पर बल दिया जाता है। संस्थान की वेबसाइट हिंदी में विकसित है और इसे नियमित रूप से अद्यतन किया जाता है। वेबसाइट पर अंग्रेजी एवं हिंदी की विषयवस्तु समान रूप में प्रदर्शित की जाती है।

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली
Indian Institute of Management Tiruchirappalli

हमारे बारे में | कार्यक्रम | लोग | Journal | अनुसंधान | प्लेसमेंट | बाहरी संबंध | कार्यकारी शिक्षा और परामर्श | बुनियादी ढांचा और संसाधन | अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

उत्पत्ति
हमारे बारे में | उत्पत्ति

यह शुभंकर **"प्रज्ञता का उत्सव"** के विचार से सृजित है। यह उपलब्धि और तृप्ति की भावना का संकेत देने वाली विस्तारित भुजाओं के साथ एक मानव रूप का आकार लेता है। संतरे की ताजगी संस्थान की संस्कृति की जीवंतता को आकर्षित करती है। भुजाओं के बीच नीले रंग का सूक्ष्म आकार भी एक ज्वाला का संकेत देता है - जो कि शिक्षा का एक पारंपरिक रूप से मान्यता प्राप्त प्रतीक है। शुभंकर की परिकल्पना परंपरा को समकालीन भाव के साथ संघटित करता है। मूल इकाई के रूप में आईआईएम त्रिची उस प्रज्ञता और वर्धन की नींव का निर्माण करती है।

पवित्र भूमि पर

भारतीय प्रबंधन संस्थान तिरुचिरापल्ली (आईआईएमटी) ग्यारहवां आईआईएम है और इसे 4 जनवरी 2011 को स्थापित किया गया था। तिरुचिरापल्ली एक ऐसा शहर है जो शिक्षा, आध्यात्मिकता, कला और संस्कृति में अपनी प्रसिद्धि हेतु विख्यात है एवं आईआईएम त्रिची इससे लाभान्वित होता है। त्रिची-पुडुकोट्टई राजमार्ग पर 175 एकड़ भूमि में फैले अपने विशाल अत्याधुनिक परिसर से आईआईएमटी कार्यरत है, जो कि तिरुचिरापल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से लगभग 11 किमी दूर है।

उत्कृष्टता का प्रतिरूपण - हमारे अस्तित्व का मानस

आईआईएम की ख्याति प्रबंधन शिक्षा में उत्कृष्टता का पर्याय बन गई है तथा भारत में अटल गुणवत्ता के लिए एक कीर्तिमान स्थापित किया है। आईआईएम त्रिची का उद्देश्य उद्योग के लिए सक्षम पेशेवरों को विकसित करने और भारत में गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान हेतु अपनी नींव रखना है।

कड़ी मेहनत, दृढ़ता, जुनून और अखंडता सफलता प्राप्ति हेतु कुछ आवश्यक गुण हैं। आईआईएमटी को प्रख्यात संकाय और प्रेरित छात्रों के समूह पर गौरव है, जो इसकी रीढ़ हैं। छात्रों का चयन पूरी तरह से जाँच प्रक्रिया के बाद किया जाता है और आईआईएमटी सर्वोत्कृष्ट छात्र-शिक्षक के अनुपात को सुनिश्चित करने में उत्कृष्ट दायित्व का निर्वहन करता है ताकि बेहतर शिक्षा को प्रोत्साहन मिले और उपयुक्त मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके।

मार्गदर्शक तारा

"ज्ञान अनंत है" एक आदर्श वाक्य है जिसने आईआईएम तिरुचिरापल्ली को दृढ़ता से नियंत्रित किया है। आईआईएमटी के पास प्रबल मूल्य हैं जो वह अपने छात्रों को प्रदान करता है, जिनमें सीखने की एक दृढ़ इच्छा प्रथम है। यह भी दृढ़ता से विश्वास करता है कि मूल्य निर्माण की नींव निरंतर सीखने के मार्ग में निहित है।

संस्थान इस तथ्य को स्वीकार करता है कि इसके छात्र भविष्य की उन्नति के लिए परिवर्तन के मुख्य स्त्रोत होंगे और इसलिए, उन्हें भविष्य के अधिनायकों के रूप में गढ़ने का प्रमुख उत्तरदायित्व है। आईआईएमटी छात्रों को उनके कार्य अनुभव और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ चुनौतियों के लिए उनकी प्रवृत्ति के आधार पर अपने शैक्षणिक पृष्ठभूमि पर निर्णय लेने की पूरी स्वतंत्रता देता है और उन्हें अपने सीखने के अनुभव में वृद्धि हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान करता है।

उत्पत्ति
दूरदर्शिता और मिशन
शासक मंडल
निदेशक का संदेश
प्रदर्शनी

निदेशक महोदय की अध्यक्षता में नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन किया जाता है। जिसमें भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम पर विस्तार से चर्चा की जाती है और हिंदी के प्रयोग के लिए निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु कार्य योजना बनाई जाती है। साथ ही कर्मियों द्वारा हिंदी में किए गए कार्यों की नियमित समीक्षा होती है।

संस्थान में नियमित रूप से राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया जाता है और कार्मिकों की राजभाषा संबंधी कठिनाइयों का निराकरण किया जाता है। हिंदी कार्य हेतु संस्थान के सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा है। तिमाही प्रगति रिपोर्ट और वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट ऑनलाइन भेजी जाती है। हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ कार्यालय में लागू हैं।

संस्थान के पुस्तकालय में हिंदी की लगभग 200 पुस्तकें है। संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित 22 भाषाओं में से 20 भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकें नियमित क्रय की जाती हैं। साथ ही पुस्तकालय में संस्कृत सहित अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं।

संस्थान की वार्षिक हिंदी पत्रिका “संगम” का 2021 से प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में मुख्यतः सामान्य गतिविधियों और संस्थान के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाते है। राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति हेतु वित्तीय वर्ष 2025-26 से इस पत्रिका का छमाही प्रकाशन होगा।

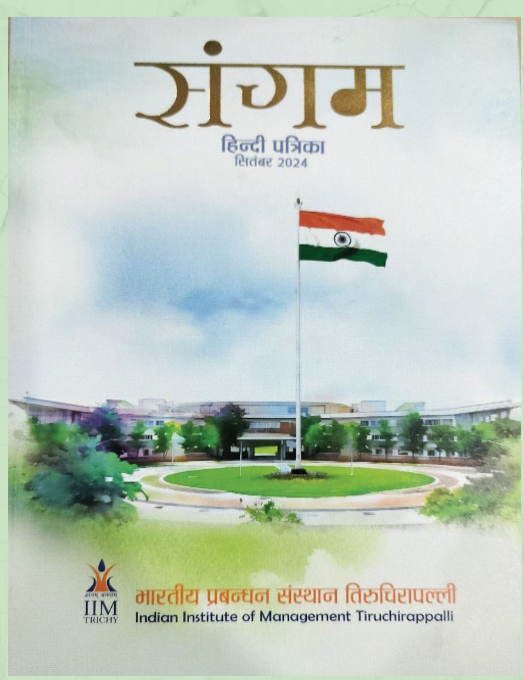

प्रत्येक तिमाही में कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। जिसमें सभी कार्मिकों को राजभाषा नीति की जानकारी दी जाती है, जिससे वे अपने दायित्वों को अच्छी तरह निभा सकें। साथ ही नियमित रूप से कार्यशालाओं/अनुभागवार डेस्क कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। कार्यशालाओं में अभ्यास पर विशेष बल दिया जाता है और राजभाषा के प्रयोग संबंधी कठिनाइयों का निराकरण किया जाता है।

राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं अन्य सम्मेलनों में संस्थान द्वारा नियमित और सक्रिय प्रतिभागिता की जाती है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा स्वर्ण जयंती कार्यक्रम दिनांक 26.06.2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित में संस्थान द्वारा प्रतिभागिता की गई थी।

कार्यालय प्रमुख द्वारा व्यक्तिगत तौर पर नियमित रूप से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठकों में भाग लिया जाता है। संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में संयोजन और प्रतिभागिता सुनिश्चित की जाती है।

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है, जिसमें संस्थान के कार्मिकों सहित बड़ी संख्या में छात्र भी प्रतिभागिता करते हैं। समग्र रूप से संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। संकाय द्वारा कक्षाओं में छात्रों से हिंदी में चर्चा की जाती है। हिंदी की बैठकों के अतिरिक्त अन्य सभी बैठकों में हिंदी में भी चर्चा की जाती है। संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक आयोजनों में संप्रेषण में हिंदी की प्रमुखता होती है। यह भी उल्लेखनीय है कि संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर पवन कुमार सिंह राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा से जुड़े हुए हैं। राजभाषा में योगदान के फलस्वरूप उन्होंने मूलतः तमिल भाषा में रचित तिरुक्कुरल का हिंदी में पद्यानुवाद किया है। इसके अलावा उन्होंने हिंदी में "जीवन विकास की शायरी" भी लिखा है, जो समाज के सभी वर्गों के लिए उपयोगी है।

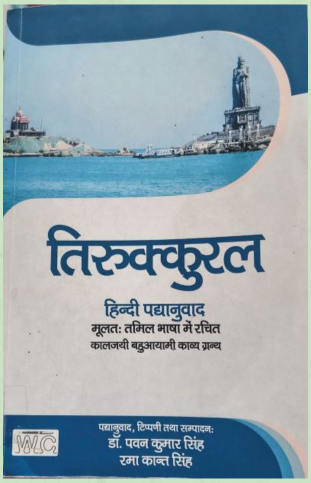

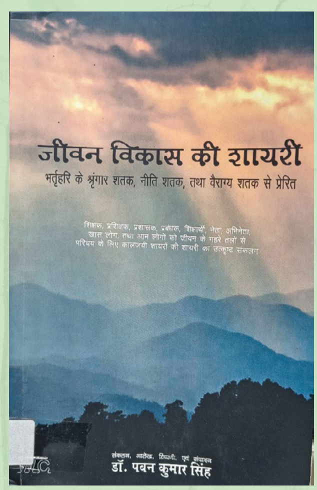

चन्द्र मोहन तिवारी
हिंदी अधिकारी, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सीढ़ी चढ़ना

हर इंसान भविष्य को लेकर चिंतित रहता है। भविष्य को सुरक्षित करने के लिए, वे अपनी कमाई के दिनों में बचत करते हैं, इस उम्मीद में कि जब वे कमाना बंद कर देंगे, तो अपनी बचत का लाभ उठा पाएँगे। अपनी बचत को भविष्य की ज़रूरतों के लिए कमाने की तकनीक को निवेश कहते हैं। सिर्फ बचत करना ही काफी नहीं है, बल्कि समझदारी से निवेश करना भी ज़रूरी है।

लोग जीवन के विभिन्न लक्ष्यों को पूरा करने के लिए बचत करते हैं, जैसे घर खरीदना, बच्चों की शिक्षा, विदेश यात्राएँ और निश्चित रूप से एक सुरक्षित सेवानिवृत्ति, ताकि अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्हें किसी पर निर्भर न रहना पड़े। जीवन के विभिन्न चरणों में जीवन के लक्ष्यों को पूरा करने वाली निवेश रणनीति को सीढ़ी चढ़ना कहते हैं। यह कुछ और नहीं बल्कि विभिन्न निवेश साधनों को चुनने का एक तरीका है, जो जरूरत पड़ने पर सही समय पर परिपक्व होते हैं। आइए इन बातों को एक 25 वर्षीय व्यक्ति के नज़रिए से देखें जिसने अभी-अभी नौकरी की दुनिया में कदम रखा है। अलग-अलग आयु वर्ग के लोगों के लिए, रणनीति अलग-अलग होगी।

सबसे पहले, पैसा बीमा में लगाना चाहिए, क्योंकि वे निवेश नहीं हैं, बल्कि अप्रत्याशित प्रतिकूल परिस्थितियों से सुरक्षा के लिए हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास दो बुनियादी बीमा पॉलिसियाँ होनी चाहिए, एक परिवार के सभी कमाने वाले सदस्यों के लिए शुद्ध टर्म इंश्योरेंस पॉलिसी और दूसरी फैमिली फ्लोटर स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी। इन भुगतानों के बाद हमारी सीढ़ी आती है।

जैसे सीढ़ी में चरण होते हैं, वैसे ही हम अपने जीवन के लक्ष्यों को समय-सीमाओं में विभाजित करते हैं। उदाहरण के लिए, सीढ़ी का पहला चरण आय के अप्रत्याशित नुकसान से निपटने के लिए आपातकालीन निधि है। आमतौर पर यह सलाह दी जाती है कि व्यक्ति के पास छह महीने के खर्चों के लिए आपातकालीन निधि होनी चाहिए। यह राशि परिवार में अधिक कमाने वाले सदस्यों आदि के आधार पर अलग-अलग हो सकती है। इसमें से दो महीने के खर्च बचत खाते में और बाकी फ्लेक्सी डिपॉजिट खाते में होने चाहिए। फ्लेक्सी डिपॉजिट खाते आपको बचत बैंक से निकासी की सुविधा के साथ सावधि जमा ब्याज का लाभ देते हैं।

इसके बाद अल्पकालिक लक्ष्य आते हैं, जैसे कार या विदेश यात्रा या नवजात शिशु के लिए स्कूल दान, जब वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो। यह निवेश प्रतिष्ठित कंपनियों के कॉर्पोरेट बॉन्ड के रूप में होना चाहिए जो AAA+ रेटिंग वाले हों या बॉन्ड फंड में हों। अगर किसी के पास एकमुश्त राशि नहीं है, तो वह एक व्यवस्थित निवेश योजना शुरू कर सकता है, जिसमें वह मासिक आधार पर निवेश कर सकता है। **निवेश की मूल बात याद रखें, 'निवेश आपका पहला खर्च है'**।

शादी आदि जैसे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, जो 5 से 10 साल की अवधि के बीच हो सकते हैं, बैलेंस्ड एडवांटेज म्यूचुअल फंड में निवेश किया जा सकता है। इस समय, कुछ साहसी लोग लगभग 10% इक्विटी निवेश पर विचार कर सकते हैं। इक्विटी निवेश सभी के लिए नहीं है और म्यूचुअल फंड का रास्ता अपनाना सुरक्षित है।

10 साल से 15 साल तक की अवधि के लिए, कोई भी शुद्ध इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकता है। इस समय, हमें मुद्रास्फीति को मात देने वाले रिटर्न की आवश्यकता होती है। फिर सेवानिवृत्ति का चरण आता है। इस समय, स्वास्थ्य देखभाल जैसे कुछ खर्च बढ़ जाते हैं, लेकिन कुछ अन्य घरेलू खर्च कम हो सकते हैं। सेवानिवृत्ति जीवन के लिए, सबसे अच्छा निवेश साधन या तो शुद्ध इक्विटी या शुद्ध इक्विटी म्यूचुअल फंड है। 25 से 30 साल की अवधि में, इक्विटी किसी भी अन्य परिसंपत्ति की तुलना में सबसे अच्छा रिटर्न प्रदान करती है।

जीवन के लक्ष्यों और उम्र के आधार पर निवेश को विभिन्न निवेश माध्यमों में लगाने की इस तकनीक को लैडरिंग कहते हैं। इससे बहुत अच्छा विविधीकरण, जोखिम और प्रतिफल का अच्छा संयोजन और तरलता भी मिलती है।

प्रो. गोपाल वी
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

सिद्ध चिकित्सा और जीवनशैली

सिद्ध पुरुषों ने स्वस्थ जीवन के लिए कुछ बुनियादी जीवनशैली दिशानिर्देशों का पालन करने की सलाह दी है, जिनमें निवारक उपायों (*पिनियनुगा विधि*) में उल्लिखित कुछ निश्चित नियमों का पालन शामिल है जो रोगों से बचाव में मदद करते हैं। दैनिक दिनचर्या हमारे शरीर और मन की अच्छी देखभाल के लिए प्रतिदिन पालन किए जाने वाले व्यवस्थित क्रम को दर्शाती है।

- सूर्योदय से पहले जागना सबसे अच्छा है। इससे पीनियल ग्रंथि का स्राव भी बढ़ता है।
- जागने के तुरंत बाद मल-मूत्र त्याग करना चाहिए। इन दोनों शारीरिक आग्रह को दबाना नहीं चाहिए क्योंकि इससे असुविधा और बीमारियाँ हो सकती हैं।
- सिद्ध पुरुषों ने योग के अभ्यास के महत्व का उल्लेख किया है, जिसमें आसन, प्राणायाम और ध्यान शामिल हैं। इन अभ्यासों का उद्देश्य शरीर को सुदृढ़ बनाना और मन को शांति प्रदान करना है जिससे स्वास्थ्य और सामंजस्य प्राप्त होता है।
- सूर्योदय से पहले स्नान करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है। गति और संवेदी अंगों को मज़बूती देने के लिए हर चार दिन में एक बार तेल से स्नान करने की सलाह दी जाती है। इसके लिए शरीर और सिर पर तिल का तेल/गाय का मक्खन/कुछ औषधीय तेल लगाने और फिर गर्म पानी से स्नान करने की विधि बताई गई है। ऐसा माना जाता है कि यह अभ्यास शरीर को हर मौसम में बीमारियों से बचाता है।
- स्वस्थ जीवन के लिए सिद्ध चिकित्सा का आधार भोजन और जीवन शैली है। 'भोजन ही दवा है और दवा ही भोजन है' सिद्ध चिकित्सा पद्धति के मूल सिद्धांतों में से एक है। डिस्बिओसिस और आंत की सूजन को चिंता और अवसाद सहित कई मानसिक बीमारियों के कारण के रूप में जोड़ा गया है, जो आज समाज में प्रचलित हैं। आंत से निकलने वाले हार्मोन, न्यूरोट्रांसमीटर और प्रतिरक्षा संबंधी कारक मस्तिष्क को सीधे या स्वायत्त न्यूरॉन्स के माध्यम से संकेत भेजने के लिए जाने जाते हैं। इसलिए, स्वस्थ आंत के कार्य को सामान्य केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (सीएनएस) के कार्य से जोड़ा गया है। मानसिक विकारों से बचने के लिए स्वस्थ और संतुलित आहार लेना आवश्यक है। जिस परिदृश्य में व्यक्ति रहता है, जिस जलवायु में वह रहता है और जिस जीवनशैली को अपनाता है, उसके अनुसार भोजन का चयन स्वस्थ जीवन जीने के लिए आवश्यक है। पुराने ज़माने में इतालवी बाजरा, रागी, मोती बाजरा, कुडो बाजरा और छोटा बाजरा जैसे बाजरे नियमित भोजन के रूप में जाने जाते थे। मनोवैज्ञानिक विकारों के लिए खरगोश का मांस खाने की सलाह दी जाती है।
- नींद हमारे शरीर को आराम देने का प्राकृतिक तरीका है। नींद की मात्रा और गुणवत्ता आमतौर पर व्यक्ति के अच्छे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। आमतौर पर बाईं ओर करवट लेकर 8 घंटे की गहरी नींद लेने की सलाह दी जाती है।
- इनके अलावा अच्छा संगीत सुनकर, किताबें पढ़कर, बागवानी करके, खेल खेलकर, यात्रा करके और प्रकृति की खोज करके अपनी आत्मा को खुश करने के लिए समय निकालें।

सिद्ध मनोचिकित्सा के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रमाण हमारे सिद्धों की बुद्धिमत्ता, ज्ञान और बुद्धिमत्ता के उच्च स्तर को दर्शाते हैं। सिद्ध ज्ञान और वर्तमान वैज्ञानिक प्रमाणों का संयोजन मनोचिकित्सा के उपचार का एक नया मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इसके अलावा, मानसिक विकारों की रोकथाम के लिए हमारे सिद्ध सही व्यवहार, स्वस्थ आहार और जीवनशैली पर ज़ोर देते हैं। निष्कर्षतः, कोई भी चिकित्सा तब तक पूरी नहीं होती जब तक कि मनुष्य का समग्र स्वास्थ्य प्राप्त न हो जाए और हमारी सिद्ध प्रणाली ऐसी ही समग्र देखभाल प्रदान करने पर केंद्रित है।

डॉ. ए. लावण्या
अनुसंधान अधिकारी (सिद्धा)

जीवन की सार्थकता

राम नाम में लीन है, देखत सब में राम।

ताके पद वंदन करूँ, जिनके हृदय में राम॥

ईश्वर की सबसे खूबसूरत रचना है ये मानव जीवन। मनुष्य को ईश्वर ने चेतना के साथ -साथ इतनी बुद्धि भी दी है, जिससे वह चाहे तो अपने आप को संसार के आवागमन से मुक्त कर सकता है और चाहे तो संसार के चक्र में फंसा रह सकता है। अपने जीवन को मुक्त करना मनुष्य के हाथ में है।

रमण महर्षि इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं। उन्होने शरीर में रहते हुए ही अपने आप को शरीर से मुक्त कर लिया। तब फिर प्रश्न यह उठता है कि क्या हम मुक्त नहीं हो सकते हो सकते, हो सकते हैं। जरूरत है अपनी चेतना के स्तर को ऊपर उठाने की। हमारी चेतना जितने उच्च्य स्तर की होगी, हमारे विचार, व्यवहार और हमारा सोचने का तरीका सब उच्च स्तर का होगा।

भगवतगीता के तेरहवें अध्याय के श्लोक संख्या 34 में भगवान कहते हैं कि- जिस प्रकार से एक सूर्य समस्त ब्रम्हांड को प्रकाशित करता है उसी प्रकार आत्मा चेतना शक्ति के साथ पूरे शरीर को प्रकाशित करती है।

इसीलिए अगर हम अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते हैं, तो सर्वप्रथम हमें ईश्वर को अपनी अपनी शक्ति बनानी होगी। आप तभी शक्तिशाली हैं जब ईश्वर आपकी शक्ति हैं। ईश्वर आप तक स्वयं आने का निर्णय नहीं लेंगे। क्योंकि वह पहले से ही आपके पास हैं। हमें केवल उसकी अनुभूति करनी है। जो भी ईश्वर की आराधना अनंत विभूति के रूप में करता है, वह स्वयं ऐसी विभूति हो जाता है।

अपनी आत्मा या चेतना को जानना ही मानव जीवन की सार्थकता है।

अंत में, मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि जब भी अपने अंदर कोई इच्छा जागृत हो तो साथ में चेतना को भी जागृत कर लीजिए। चेतना के स्तर पर जीना ही होशपूर्ण जीवन है और सही मायने में होशपूर्ण जीवन ही सार्थक जीवन है।

हरि ओम।

श्रीमती पूनम सिंह
परिवार सदस्य प्रोफेसर पवन कुमार सिंह
निदेशक, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

इक्कीसवीं सदी में भारतीय महिला उद्यमियों का परिदृश्य

भारत आर्थिक विकास के साथ-साथ अपने कार्यबल में उल्लेखनीय परिवर्तन का अनुभव कर रहा है, विशेष रूप से उद्यमिता में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के साथ। फ्रेडरिक हार्बिसन ने महिला उद्यमियों को ऐसे व्यक्तियों या महिलाओं के समूहों के रूप में परिभाषित किया है जो आर्थिक गतिविधियाँ शुरू करती हैं, नवाचार करती हैं या उनमें संलग्न होती हैं। नवीनतम आर्थिक जनगणना दर्शाती है कि भारत में 80 लाख से अधिक महिला उद्यमी हैं, जो सभी महिला प्रबंधित उद्यमों का लगभग 14% है।

अधिकांश महिला उद्यमी स्थानीय और शहरी बाज़ारों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जबकि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में उनकी भागीदारी सीमित है। यह तरीका परिचित और सुलभ बाज़ारों के प्रति उनकी प्राथमिकता, बड़े बाज़ारों में प्रवेश में संभावित बाधाओं, या विस्तार के लिए आवश्यक संसाधनों और नेटवर्क की कमी का संकेत दे सकता है। पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ महिलाओं को उद्यमिता अपनाने और वित्तीय सहायता लेने से हतोत्साहित कर सकती हैं, जिससे वित्तीय प्रबंधन में कम क्षमता की धारणा को बढ़ावा मिलता है। परिणामस्वरूप, पर्याप्त धन के बिना, महिला उद्यमियों को अपने व्यवसायों का विस्तार करने, कर्मचारियों की नियुक्ति करने, प्रौद्योगिकी में निवेश करने या नए बाज़ारों की खोज करने में कठिनाई हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप अक्सर व्यक्तिगत बचत पर अत्यधिक निर्भरता होती है, जिससे वित्तीय दबाव बढ़ जाता है।

भारतीय महिलाओं ने असाधारण लचीलापन दिखाया है और विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है। जैसे-जैसे सामाजिक परिदृश्य विकसित हो रहा है, शिक्षा और आकांक्षाओं में वृद्धि के साथ, भारत में महिलाओं ने न केवल पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा की है, बल्कि व्यावसायिक जगत में भी उत्कृष्टता हासिल की है। ये मार्गदर्शक महिलाएं दृढ़ संकल्प, प्रेरक क्षमता और जोखिम उठाने की तत्परता का प्रदर्शन करती हैं। उनकी लगन, प्रतिबद्धता और दृढ़ता ने उन्हें प्रतिस्पर्धी बाजार में सफल होने में सक्षम बनाया है। फिर भी, उन्हें अपने व्यवसाय शुरू करने और प्रबंधित करने में प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे सीमित शैक्षिक पहुँच, अपर्याप्त तकनीकी कौशल, विपणन संबंधी कठिनाइयाँ और सीमित वित्त पोषण के अवसर।

यह अध्ययन 20 प्रश्न, 5- बिंदु वाली लिकर्ट स्केल प्रश्नावली का उपयोग करके तैयार किया गया था, जिसमें 'पूरी तरह सहमत' से लेकर 'पूरी तरह असहमत' तक के विकल्प थे। मदों को यादृच्छिक क्रम में व्यवस्थित किया गया था। अध्ययन में 100 महिला उद्यमियों ने भाग लिया। अध्ययन का व्यापक आयाम वित्तीय संस्थानों के माध्यम से महिला उद्यमियों के लिए ऋण की उपलब्धता था। प्रश्नावली संबंधित मुद्दे को संबोधित करने के लिए तैयार की गई थी। 18-60 वर्ष की आयु वर्ग की कुल 100 महिला उद्यमियों का चयन किया गया। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण SPSS का उपयोग करके किया गया। आँकड़ों में आपस में समानताएँ दिखाई दीं, इसलिए उन्हें पहचानने और उन्हें कारकों में समूहित करने के लिए खोजपूर्ण कारक विश्लेषण का उपयोग किया गया, अधिकतम समानता निकालने के लिए वैरिमैक्स रोटेशन का उपयोग किया गया। विश्लेषण के बाद प्राप्त आँकड़ों से पता चलता है कि ऋण, अध्ययन का एक चर था, और इसमें तीन उप- कारक शामिल थे, जो 0.53 से अधिक का भार दर्शाते थे, और ईगन मान 0.83 पर स्थिर था। इन्हें जटिल ऋण प्रक्रिया, संपार्श्विक की कमी और उच्च ब्याज दर नाम दिया गया था। अंतिम विश्लेषण में 0.53 से कम भार दर्शाने वाले कारकों को हटा दिया गया। परिणामों का सारांश नीचे दी गई तालिका में दिया गया है:

वैरिमैक्स रोटेशन का उपयोग करके समग्र कारक भार के लिए आँकड़ों का आगे विश्लेषण किया गया, उच्च ब्याज दर के लिए का अधिकतम भार मान 0.73 दिखाया गया, उसके बाद जटिल ऋण प्रक्रिया के लिए 0.68 और संपार्श्विक के अभाव में सबसे कम भार, अर्थात् केवल 0.57, पाया गया। परिणाम का सारांश नीचे दिया गया है:

ऋणभार मान

1. उच्च ब्याज दर 0.73

2. जटिल ऋण प्रक्रिया 0.68

3. संपार्श्विक का अभाव 0.57

इस प्रकार, उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि महिला उद्यमियों के समक्ष संस्थागत ऋण की उपलब्धता एक प्रमुख मुद्दा है। इसके अलावा, इस कारक के तीन उप-घटक हैं, यानी उच्च ब्याज दर, जटिल ऋण प्रक्रिया और संपार्श्विक की कमी। इनमें से, उच्च ब्याज दर का मुद्दा एक प्रमुख कारण है, जिसके कारण महिला उद्यमी संस्थागत ऋण लेने से हिचकिचाती हैं।

उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षित उद्यमी आवश्यक हैं । उन्नत डिग्रियाँ और प्रमाणपत्र प्राप्त करने से उनकी पेशेवर प्रतिष्ठा बढ़ती है और अपने क्षेत्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता प्रदर्शित होती है। यह विश्वसनीयता वित्त पोषण या साझेदारी हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह संभावित निवेशकों और सहयोगियों में उद्यमी की विशेषज्ञता और क्षमताओं के बारे में विश्वास को बढ़ावा देती है।

अध्ययनों से पता चलता है कि अधिकांश महिला उद्यमियों के पास स्नातक डिग्री है, हालाँकि कुछ सर्वेक्षणित महिला उद्यमियों में इस स्तर की शिक्षा का अभाव है। इसलिए, सहायता प्रदान करने से पहले, विभिन्न शोध अध्ययनों में उजागर किए गए अन्य कारकों के साथ-साथ शैक्षिक योग्यता को भी ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

एक सहायक वातावरण बनाना बेहद ज़रूरी है, जिसमें सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और साथ ही पारिवारिक सहयोग को बढ़ावा देना शामिल है। सामाजिक मानदंडों को संबोधित करने के लिए लैंगिक समानता को बढ़ावा देना, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से पितृसत्तात्मक विचारों को चुनौती देना और सफल महिला उद्यमियों को प्रेरक उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है। इसके अलावा, सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है, जिसके लिए परिवहन अवसंरचना में सुधार और सुरक्षित कार्य एवं यात्रा वातावरण का निर्माण आवश्यक है। अंत में, सरकारी और संस्थागत सहयोग से उद्यमिता कार्यक्रमों तक समान पहुँच सुनिश्चित होनी चाहिए, साथ ही महिलाओं के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए परामर्श और रोज़गार मेलों का भी आयोजन किया जाना चाहिए।

किसी भी व्यवसाय की सफलता के लिए प्रभावी वित्तीय प्रबंधन आवश्यक है, फिर भी महिला उद्यमियों को इस क्षेत्र में अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाओं द्वारा अपनाई गई वित्तीय रणनीतियाँ आवश्यक रूप से बेहतर व्यावसायिक परिणाम नहीं देतीं। कई महिला उद्यमियों को कुशल लेखाकारों को नियुक्त करने, सटीक व्यावसायिक रिकॉर्ड बनाए रखने और वित्तीय विवरण तैयार करने में कठिनाई होती है, जिससे उनकी ऋण प्राप्त करने की क्षमता प्रभावित होती है। वित्तीय संसाधनों की यह कमी उनके विकास और विस्तार में बाधा बन सकती है।

अनुपम कुमारी
शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

रवि रंजन
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

प्रो. अभिषेक तोतावार
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

नारी एक : रूप अनेक

प्राचीन भारत के इतिहास पर अगर दृष्टि डालें, तो ज्ञात होता है कि यहाँ नारी को आदरपूर्ण स्थान दिया जाता था। हमारे पूर्वज भी कहते थे कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। समय के परिवर्तन के साथ-साथ नारी-वर्ग की स्थिति में बदलाव आया और मुगलकाल में इसकी दिशा गिरावट की ओर चली गई। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति तक नारी जाति को शोषण का शिकार बनाया जाता रहा है, जिसके विरुद्ध कुछ समाज-सुधारकों ने आवाज़ उठाई।

नर और नारी समाज-रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं, जो एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि इसमें से एक भी पहिया दुर्बल या दोषपूर्ण हुआ, तो समाज-रूपी गाड़ी लड़खड़ा जाएगी। नारी यदि गृहस्थ की पतवार है, तो पुरुष उसका खेवनहार है। गृहस्थ जीवन की सुख शांति, आनंद तथा उत्थान इन दोनों पर ही आधारित है।

स्वतंत्रता के उपरांत शिक्षा के विकास ने नारी को पुरुषों के समान बाहर निकलने एवं अपने पैरों पर खड़ा होने का सुअवसर प्रदान किया है। नारी आज घर की चारदीवारी में बंद नहीं रहना चाहती। वह स्वावलंबी होकर हर क्षेत्र में परस्पर सहभागिता के लिए तैयार है। वैज्ञानिक सोच एवं आधुनिक विचारधारा ने नारी जगत के सामने भी संभावनाओं के नए क्षितिज खोले हैं।

आज नर और नारी एक समान हैं। वह पुरुषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में अपने पाँव पसार रही है। अध्यापन, चिकित्सा, सलाहकार एवं सचिव के क्षेत्र में नारी अपनी उपस्थिति तो दर्ज करा ही चुकी है, सुरक्षा के क्षेत्र में भी आज वह अग्रणी भूमिका निभा रही है। पुलिस के उच्च पदों पर पहुँचने के साथ-साथ अब सुरक्षा सेनाओं में भी प्रवेश कर चुकी है। उसने अपनी बुद्धि, योग्यता तथा आत्म-विश्वास से यह भली-भाँति सिद्ध कर दिया है कि आज वह 'अबला' नहीं, 'सबला' है, परावलंबी नहीं, स्वावलंबी है, वह पुरुष के उपभोग की वस्तु नहीं, उसकी सहयोगिनी है, घर की चारदीवारी में बंद रहकर अत्याचार सहने वाली नहीं, सामाजिक जीवन की आधारशिला है।

आज के परिवेश में उच्च मध्यमवर्गीय परिवार की भी नारियाँ नौकरी-पेशा में हैं। समाज में अपनी ऊँची हैसियत रखने के लिए नौकरी करना उनका शौक है और उससे होने वाली आय को सुख-सुविधा में व्यय करती हैं। परंतु बेरोज़गारी के इस युग में उन नारियों को नौकरी की अधिक आवश्यकता है, जो अभावों एवं परेशानियों में अपनी जिंदगी गुज़ार रही हैं। अच्छे पदों को पाना अथवा अच्छी नौकरी पाना आधुनिकता नहीं है। आधुनिकता का सही अर्थ भाव-विचार एवं कार्यों के संपादन में सोच की आधुनिकता है, चेतना की स्वतंत्रता है।

कुछ लोगों का मत है कि नारी कितनी भी आधुनिक क्यों न हो जाए, भले ही पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले, परंतु नर और नारी एक समान नहीं हो सकते। उनका मानना है कि नर बुद्धि-प्रधान है, तो नारी हृदय-प्रधान। नारी का कार्य गृह की व्यवस्था तथा संतान का पालन-पोषण करना है। यदि उसे समान समझकर जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुष के समकक्ष कार्य करने की छूट दी गई, तो इससे हमारा पारिवारिक ढाँचा बिखर जाएगा, जिसका कुप्रभाव बच्चों पर पड़ेगा। परंतु आज के परिवर्तनशील समय में उनका यह मत उचित प्रतीत नहीं होता। आज के बदलते हुए परिवेश में शिक्षा और कानून के माध्यम से उसने अपने आपको पहचानकर पुरुषों के समकक्ष खड़ा किया है। उसे आज घर की चारदीवारी में बंद नहीं किया जा सकता।

आज की नारी शिक्षित है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। उसकी क्षमता, योग्यता, विवेक तथा कार्य-कुशलता ने यह भली-भाँति सिद्ध कर दिया है कि नर और नारी एक समान हैं तथा नारी को किसी भी प्रकार से नर से दुर्बल अथवा हीन नहीं आँका जा सकता। कहते हैं कि हर महान पुरुष के पीछे किसी नारी का हाथ होता है। यदि नारी ही पुरुष की महानता की निर्मात्री है, तो वह पुरुष के समकक्ष क्या, वह तो एक कदम आगे ही है। आज समय आ गया है कि नारी के प्रति हम अपनी विचारधारा को बदलें और उसे वह सम्मान दें, जो उसे प्राचीन भारत में मिलता था।

पंकजा सिंह
परिवार सदस्य, प्रो. जंग बहादुर सिंह
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

तकनीक और आज के बच्चे

तकनीक आधुनिक बचपन का एक अभिन्न अंग बन गई है,
जो लाभ और जोखिम दोनों प्रदान करती है।डिजिटलीकरण और जोखिमों के बीच
संतुलन और उपयोग कैसे करें, इस पर मेरा अनुभव इस प्रकार है।
मेरा बेटा मोबाइल पर गेम्स का बहुत शौकीन है, वह बस गूगल प्ले खोलता है
और बेतरतीब ढंग से गेम्स डाउनलोड कर लेता है। एक दिन मैं उसके साथ बैठी और
मैंने उसे सुझाव दिया कि तुम सिर्फ़ एक शर्त पर गेम खेल और डाउनलोड कर सकते हो:
जब भी गेम डाउनलोड करो, बस नीचे स्क्रॉल करो और डेटा सुरक्षा जाँच लो।
अगर यह दिखाता है कि ऐप व्यक्तिगत डेटा एकत्र करता है,
तो तुम्हें इसे डाउनलोड नहीं करना चाहिए। इस सुझाव से मेरे मोबाइल में
गेम्स डाउनलोड में भारी कमी आई। इसके अलावा, जब हम किराने का सामान खरीदने जाते हैं,
तो मैं अपने बच्चों को सलाह देती हूँ कि वे रैपर के पीछे देखें कि क्या आपको
चीनी, मैदा, तेल आदि दिखाई देता है, तो आपको उसे टोकरी में नहीं डालना चाहिए।
इससे पता चलता है कि हमने जो भी चीज़ें खरीदीं, वे ज़्यादातर स्वास्थ्यवर्धक थीं।
लेकिन मेरे बच्चे किराने की दुकान के बाहर एक पॉपकॉर्न स्टॉल पर खड़े होकर मासूमियत से मुझसे
पूछते हैं कि इसमें मैदा, चीनी नहीं है, और उनके पापा सुरक्षित रहते हैं और कहते हैं कि अगर
तुम्हारी मम्मी इजाज़त दे तो खरीद लो। मुझे स्टोर के बाहर से तकनीक की कमी वाली
चीज़ें खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ता है। ये मेरे छोटे से अनुभव हैं जिनसे मुझे लगता
है कि मैंने तकनीक के नुकसान को कम किया है।

श्रीमती माधवी कद्दारी
परिवार सदस्य, संतोष कद्दारी

मानवता और विज्ञान से भविष्य का मिलान

जग के विकास के लिए विज्ञान है आधार।
भविष्य को यह बनाता अद्भुत संसार।।
पर जब समस्याएं बढ़तीं हैं लगातार।
तब समझौता करना पड़ता हमें विस्तार ।।

कार्य समूह है S20 जो करता विशेष विचार।
सतत विकास, ग्रीन एनर्जी एवं ग्लोबल रोजगार।।
जो तय करता संकट मुक्त करें कैसे संसार।
हर मुद्दे पर चर्चा बनती जरूरी नियमों का आधार।।

भारत ने दिया है संभावनाओं का नया आकर।
इससे खुलेंगे सतत विकास और समृद्धि के द्वार।।
विज्ञान और मानवता का मिलान, है हम सबका विचार।
जिससे भविष्य के लिए में बनेगा हम सबका आधार।।

समावेशी विकास के लिए इस विज्ञान का रोल अनमोल।
संरचना से लेकर ऊर्जा तक बसता उसका स्कूल।।
विज्ञान, तकनीकी एवं मानवता का अद्भुत मिलान।
सतत विकास के लिए जरूरी है यह समाधान।।

शुद्ध ऊर्जा, स्वास्थ्य और संस्कृति से जोड़ना होगा विज्ञान।
जिससे बनेगा सुनहरे भविष्य का निशान।।
सामाजिक विज्ञान से जीवन की महत्ता होगी संज्ञान।
आइए साथ मिलकर करें सतत विकास का अभियान।।

इसी भावना को अपनाकर होगा समस्त मानवता का उत्थान।
अभिनव और सतत विकास के लिए विघटनकारी विज्ञान।।
हम सबको मिलकर ढूंढना है इसका निदान।
लाएंगे नए उद्यम की राह पर ये देश महान।।

अनिकेत सचान
शोधार्थी, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

परिवर्तन की परिभाषा -प्रौद्योगिकी और समाज

अनजान, अबोध और आसान था इंसान,
जब तक पास नहीं था विज्ञान ।
बुद्धि, क्षमता और प्रबुद्धि,
से ले आया प्रौद्योगिकी ।
बदली समाज की भाषा और परिभाषा,
और प्रारंभ हुई अंतहीन अभिलाषा ।
स्वास्थ्य, संचार और उत्पादन,
संभव हुआ अद्भुत प्रगति और उत्थान ।
सूरज, चाँद और तारे नहीं है अब अनजान,
मंगल मे पहुंचा अपना मंगलयान ।
सबको मिले भर पेट अनाज,
प्रौद्योगिकी से करीब हुआ समाज ।
परंतु प्रगति के पथ मे बढ़ता इंसान,
ना जाने कब पड़ोस से होता गया अनजान ।
खेल-कूद और मिलन-समारोह कम है आज.
मोबाईल और कंप्युटर मे सिमटता जा रहा समाज ।
कौशल और तकनीक का है सिर्फ सम्मान,
आम आदमी खोता जा रहा अपनी पहचान ।
अंत मे है एक विनती ....
प्रगति और प्रकीर्ति का हो तालमेल,
आर्टिफिसियल के संग आर्ट जीवित रहे अंतकाल ।

अमित कुमार
भंडार एवं क्रय अधिकारी
सीएसआईआर- उत्तर -पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान,
जोरहाट (आसाम)
परिवार सदस्य, चन्द्र मोहन तिवारी

युग प्रवर्तक

तुम वीर हो, और धीर हो
फिर अपने निर्मल चित्त से क्यों अधीर हो,
तुम सा संयमी न देखा मैने,
तुमको ही युग प्रवर्तक माना मैने।

क्या मेल है, तुम्हारे चित्त और चरित्र का
ये प्रकृति ने स्वयं विचारा है,
तुम उस हिमवन के क्षीर हो,
जिसे स्वयं प्रकृति ने अपनी ममतामयी आँचल से तारा है।।

फिर क्या प्रयोजन जो खुद को समेटकर आए हो,
यह कुसुमंडल बिखर रहा, जिसे सहेजकर तुम लाए हो।।
तुम मे तुरंग सी फुर्ती लय है
देखो गगन तुम मे मय है,
बन जाओ धरा के अग्रदूत तुम,
धरणी तुम्हारी प्रतीक्षामय है।।

ना हो विचलित हे! नवपुंज तुम,
ये धरणी तुमसे आसी हैं,
मुक्त करोगे इसको उन जंजीरों से
जिसके लिए वह प्यासी हैं।।

अंकित सिंह
परिवार सदस्य, प्रो. जंग बहादुर सिंह
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

कहाँ जा रहा है समय का रथ?

कहाँ जा रहा है समय का रथ,
गति है अपार, पर दिशा में शंका है।
मशीनें सोचती हैं अब —
और मनुष्य पूछता है: "मैं क्या हूँ?"

नवाचार की चमक है हर मोड़ पर,
पर क्या हर रोशनी में उजास है?
या हम अंधकार के नए रूप गढ़ रहे हैं —
चमकते पर्दों के पीछे?

नेतृत्व अब आंकड़ों से संवाद करता है,
भावनाएँ फ़ाइलों में नहीं मिलती।
निर्णय तेज़ हैं, सटीक हैं —
पर क्या वे सही भी हैं?

शिक्षा डिजिटल है,
सीखना प्रमाणित।
लेकिन क्या आत्मा ने भी कुछ सीखा?
या सिर्फ स्क्रीन ने समझा?

समावेश की बातें हैं मंचों पर,
पर नेटवर्क की सीमाओं में कई जीवन गुम हैं।
क्या हम एक ऐसा समाज बना रहे हैं —
जहाँ डेटा है, पर दया नहीं?

हर परिवर्तन से प्रश्न उपजते हैं,
पर उत्तर नहीं आते।
शायद आने भी नहीं चाहिए —
क्योंकि कुछ प्रश्न, प्रश्न ही रहना बेहतर हैं।

प्रगति की इस दौड़ में
ठहराव अपराध बन चुका है।
पर हो सकता है —
ठहर कर ही हम इंसान बने रहें।

तो पूछिए —
क्या हम तकनीक को चला रहे हैं,
या वह हमें गढ़ रही है?
क्या हम भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं,
या सिर्फ अतीत को नए रंगों में दोहरा रहे हैं?

(और अंत में...)
यह कविता जब हिंदी में ढली,
तो किसी कलम ने नहीं —
एक कृत्रिम चेतना ने शब्दों को छुआ।
क्या वह सिर्फ अनुवाद था,
या विचार का विस्तार —
यह प्रश्न भी शायद समय के लिए छोड़ देना बेहतर होगा।

गणेश बालसुब्रमनियन
शोधार्थी, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

चाँद और अंधकार

प्राचीन है बहुत गाथा
चाँद और अंधकार की
अनादिकाल से सुनी आ रही
कहानी उनके प्यार और तकरार की ।

चाँद और अंधकार में था बैर बड़ा
सुलझ पा नहीं रह था उनका ये झगड़ा
रात पर होगा राज मेरा - दोनों की यही थी धुन
एक-दूसरे के लिए रहे थे नित नये षडयंत्र बुन ।
जब ना आयी कोई भी युक्ति काम
तब उन्होंने जनमत संग्रह को दिया अंजाम ।

समुद्र ने कहा चाँद मुझे हर रात सताता है
अपनी किरणों से मेरे हृदय में उबाल लाता है
दुःख-दर्द समझता है अंधकार अपनी प्रजा का
दे दो उसे ही पद रात के महाराजा का ।

बूढ़ा पेड़ बरगद का बोल उठा
चमकी आँखें पशुओं की
कलकल कर उठे नदी-नाले
सीना चीर अंधकार का
चाँद फैला देता उजाला
स्निग्धता उसकी करती शांत दिल हमारे ।
ये विकीर्ण रश्मियाँ चंद्र की
करतीं जाग्रत कल की उम्मीदों को
क्या ये पूरी करती नहीं प्रजापालक
राजा की मनोहारी छवि को !

संतुष्ट हो नहीं पा रहे थे
चाँद और अंधकार मतों की इस भिन्नता से
तभी भेंट हो गयी उनकी
साक्षात जग-नियन्ता से ।

हाथ जोड़कर किया उन्हें शत शत नमन
और बताया अपनी उद्विग्नता का कारण ।

भगवन ने भी अपनी बुद्धि दौड़ाई
उन्हें एकदम उचित युक्ति सुझाई ।
चाँद से कहा कि हर कोई रहेगा मोहित उसपे
जग में सुंदरता की व्याख्या होगी उसके नाम से
हर रात होगा राज उसका,
संसार पे भी और दिलों पे भी ।
किन्तु मास में लेना होगा
विश्राम उसे एक दिन
अंधकार का होगा जब साम्राज्य
निस्तब्ध रह जाएँगे लोक तीन ।

ध्यान से सुनो अंधकार तुम
दुख न करना, चाँद से मिल रहा तुम्हें
महज एक दिवस का छुटकारा
जन्म लेंगे तेरे ही आगोश में
हर हृदय की धड़कन, हर आँख की चमक
श्री कृष्ण, इस जगत का सितारा ।

नाच उठे खुशी से वे दोनों यह सुनकर
चल पड़े प्रफुल्लित मन से अपने-अपने पथ पर ।

प्राचीन है बहुत गाथा
चाँद और अंधकार की
अनादिकाल से सुनी आ रही
कहानी उनके प्यार और तकरार की ।

प्राची मधुकर
एम बी ए

मानव

तू क्यों सिर्फ बदलाव का सोचता है
क्यों कुछ कर पाता नहीं
क्यों जो तेरे लिए सही है
उस दिशा तू चल पाता नहीं
जानता हूँ हालात सही नहीं हैं
पर कही न कही कसूरवार तू खुद है
जो हर बार करने से पहले टालता बहुत है
झांक के देख उस सपने को कितना निभा पाया है
अभी मीलों दूर खड़ा सिर्फ वादे किए जा रहा है
कर इरादा इस बार, कि पूरा किए बिना न ठहरेगा
अब कुछ भी हो जाए हार नहीं मानेगा

अमीषा बाहेती
एम बी ए

नवा-ए-ख़ुदी

शब-ओ-नसीम[1] कुछ तो बता, अब तो सहर[2] होने को आई है;
कुछ बचा है पाने को, या फ़क़त[3] सोज़-ए-तन्हाई[4] है?

पूछता हूँ खुद से आज क्यों परवाह नहीं तुझे बज़्म-ए-जहाँ[5] की;
कल तलक तेरे ही सरीर[6] ने इश्क़-ए-ग़ैरत[7] जगाई है।

जो खुद-परस्त[8] होता शायद, तो कब का मिट गया होता;
जो रोशन करे आलम[9] को, मैंने तो वो शमा[10] जलाई है।

न था इतना कम-ज़र्फ़[11] कि बहल जाता नुमूद-ओ-नुमाइश[12] में;
गुरूर तो यह है जो हुई राह आम, मैंने अलग राह बनाई है।

डरें तो वो जो बहते हों ख़्वाहिश के धारे में;
तुम ने तो 'अफ़्फ़ान' अपनी हस्ती[13] अपने हाथों से मिटाई है।

मोहम्मद अफान खान
एम बी ए

शुक्रन

इस युग में, जहाँ तनाव का बोलबाला है,
चिंता और उदासी का जाल फैला है।
पर क्या यह जरूरी है कि हम इसमें फँस जाएँ?
क्या हम नहीं चुन सकते हैं खुशी का रास्ता?

वर्चुअल दुनिया में, जहाँ अकेलापन है,
वहाँ भी है सुकून, वहाँ भी है प्यार का एहसास।
नहीं चाहिए किसी की साथ, नहीं चाहिए किसी का हाथ,
फिर भी जी सकते हैं हम खुशी से, अपने आप में मग्न।

इस युग में, जहाँ नकारात्मकता का बोलबाला है,
वहाँ भी है सकारात्मकता की किरण।
चुनें हम खुशी का रास्ता, चुनें हम सुकून का मार्ग,
और बनाएं यह दुनिया एक खुशहाल संसार।

जीवन सुंदर है, दुनिया सुंदर है,
भविष्य उज्ज्वल है, वर्तमान एक तोहफा है।
चाहे कोई हो या न हो, तुम हो, तुम जी रहे हो,
तुम्हारे पास है जीने का हर कारण।

तो आओ, चुनें हम खुशी का रास्ता,
और बनाएं यह दुनिया एक खुशहाल संसार।
इस वर्चुअल दुनिया के विकल्पों का करें उपयोग,
और फैलाएं खुशी की किरणें हर ओर... ..

जेसी चेट्टियान्कंडी
पी जी सी एस एम पी

कुछ तो बदल गया है यार!

वो खिड़की के पास वाली सीट,
अब बस किताबों की नहीं रही।
जहाँ कभी ख्वाब पले थे,
अब वहाँ फ़ोन की लत लगी रही।

पहले काग़ज़ पे कलम चलती थी,
अब उंगलियाँ बस स्क्रीन पे दौड़ती हैं।
चाय की चुस्की में जो बातें थी,
अब नोटिफ़िकेशन में गुम हो जाती हैं।

दिन वही, साथी वही,
पर बातों का रंग कुछ फीका सा है।
भीड़ है चारों ओर फिर भी,
मन थोड़ा तन्हा-सा है।

फिर भी मुस्कान आती है,
जब कोई बेवजह पूछता है — “कैसे हो?”
क्योंकि इस बदले ज़माने में,
कुछ अपनापन अब भी बाकी है।

अतुल
एम बी ए

मैं आया था सपना लेकर

बैठा था मैं, बस अड्डे के एक कोने में,
थके पैरों में सपनों की थैली थी,
सिकुड़ी हुई एक उम्मीद -
कि ये शहर, सबको जगह देता है।

तभी आए कुछ चेहरे -
आँखों में गुस्सा, लहजे में डरावनी हक़दारी।
"बोल हमारी भाषा!"
मैं हकला गया...
मेरी ज़ुबां नहीं थी उनकी,
मेरी चुप्पी बन गई मेरी सज़ा।

घूंसे बरसे, लातें चलीं,
ज़मीन गीली हुई - मेरे खून से,
और मेरे ख्वाब...
वहीं धूल में सिसकते रह गए।

तभी भागते हुए आई वो,
मेरी जान, मेरी प्रेमिका -
उसी मिट्टी की बेटी,
जिसने मेरे खून को नहीं,
मुझसे जुड़े हर दर्द को महसूस किया।

हाथ में थी थाली,
मेरे पसंदीदा खाने की,
जो उसी धरती की सौगात थी -
लेकिन जब देखा मेरा चेहरा लहूलुहान,
उसके हाथ से थाली छूट गई,
जैसे भरोसा गिरा हो...
या फिर पूरी सभ्यता।

"ये नहीं होना चाहिए था..." वो बुदबुदाई,
"मैं तुम्हें अपना बनाना चाहती थी,
लेकिन मेरी ज़ुबां के नाम पर
तुम्हें पराया कर दिया गया।"

वो रोई... और पहली बार,
मुझे लगा नफ़रत से ज़्यादा दर्द
उस प्रेम में था, जो बीच में आकर खड़ा था।

और जो मुझ पर हाथ उठाते थे,
उनके बच्चे आज भी वहीं हैं -
नौकरी की कतार में,
कंधों पर डिग्रियाँ, पर जेबें खाली।

वो मुझसे कहते हैं -
"तू क्यों आया? हमारे हिस्से का भविष्य चुराने?"
मैं कहता हूँ -
"मैं भी बस जीना चाहता था... ठीक तुम्हारी तरह।"

किसे दोष दूँ?
खुद को - कि मैं बाहर से आया?
या तुम्हें - कि तुम खुद को ही हाशिए पर पाते हो?
या उस ढांचे को -
जिसने हमें एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया?

मेरी प्रेमिका अब भी मुझसे प्यार करती है,
पर अब वो चुप रहती है,
शायद इसलिए क्योंकि
उसके शब्द भी अब एक पक्ष समझे जाते हैं।

और मैं?
मैं अब भी उसी शहर में हूँ,
जहाँ सपने मरते नहीं -
बस, भाषा की लाठियों से घायल हो जाते हैं।

हेमंत कोठारी
एम बी ए - एच आर

प्रेम की परिभाषा

कुछ लोग कहते हैं कि
'मुझे' प्रेम का ज्ञान नहीं,
पूछती हूँ उनसे, क्या
वो इससे अनजान नहीं?

मेरे प्रेम की अपनी ही परिभाषा है,
इसमें हर्ष है, उल्लास है
और कुछ भी ना पाने की
एक सकारात्मक आशा है।

यह प्रेम प्रकृति से है, सृष्टि से है,
सृजन और समाज से है।
यह प्रेम मानवता से है, साहस से है,
नियति और कल्याण से है।

यह प्रेम मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है,
मानवता के, कुछ अनछुए पन्ने खोलता है।
इसमें सहजता है, ममता है, सम्मान है
यह प्रेम एक नारी का अभिमान है ।

यह नीति है, निष्ठा है, धर्म है
यह प्रेम प्रत्येक मानव का कर्म है।
यह मैत्री है, संतुलन है, विश्वास है
यह स्वर्णिम क्षणों का एक सुखद एहसास है।

इस प्रेम में कोई विवशता नहीं
अपितु एक साहस है, ऊर्जा है ।
ईश्वर का यह अनूठा वरदान ही
मेरा कर्म है, मेरी पूजा है ।

यह प्रेम मुझे, अजनबियों की भी
वेदनाओं की अनुभूति कराता है ।
उनका कष्ट यूँ ही मेरी आँखें
कुछ नम कर जाता है ।

यह प्रेम श्रृंगार नहीं, कल्पना नहीं
अपितु यथार्थ है ।
यह प्रेम, मेरे संपूर्ण जगत
का भावार्थ है ।

क्या हुआ जो यह प्रेम,
कुछ अलग है ?
इसमें पाने से ज़्यादा,
देने की ललक है ।

इस प्रेम की अपनी ही परिभाषा है ,
इसमें हर्ष है , उल्लास है
और कुछ भी ना पाने की
एक सकारात्मक आशा है ।

जो लोग कहते हैं कि
मुझे प्रेम का ज्ञान नहीं
पूछती हूँ उनसे, क्या
वो मुझसे अनजान नहीं?

दिव्या द्विवेदी
परिवार सदस्य, प्रो. बिपिन कुमार दीक्षित
संकाय सदस्य, आई आई एम तिरुचिरापल्ली

मन का दिया तो जला ले

जिन्दगी का सफर करने वाले,
अपने मन का दिया तो जलाले !

सूनी सूनी ये मंजिल की राहें, चूमना तेरे चरणो को चाहें,
भटक जाए ना तेरी निगाहें, गहन बन मे कँही रखो ना जायें,
रोशनी से डगर जगमगाले हो सके तो दीवाली मना ले।
जिन्दगी का सफर करने वाले.....

देख ऐसी जगह तू खड़ा है, ज्ञान गंगा जँहा बह रही है,
आत्मा कृष्ठ क्यों सह रही है, दुःख से बोझिल बड़ी हो रही है,
बढ़ के गंगा में गोता लगाले, पॉप करने से खुद को बचाले।
जिन्दगी का सफर करने वाले.....

जिन्दगी का भरोसा नहीं है, ये तो चलती घड़ी की सुई है,
जब तलक ये प्रभु की कृपा है, हर समय हमको समझा रही है,
भक्ती की बैटरी तू लगाले, जिन्दगी की घड़ी को चलाले।

जिन्दगी का सफर करने वाले, अपने मन का दिया तो जलाले !!

आयुषी सिंघल
एम बी ए

परिवर्तन की परिभाषा -प्रौद्योगिकी और समाज

जो ठहरे हुए जीवन मे लहर भर दे।
पुरानी सोच को तोड़कर नया करदे।
अंधेरे में उम्मीद की किरण भर दे।
यही तो परिवर्तन है, जो सब कुछ सरल कर दे।

यह समय की चाल है, नव उदय का नाम है।
हर क्षण बदलते, समाज का आयाम है।
नव सोच, नव सृजन, नव ऊर्जा का संचार है।
हर बदलाव मे छुपा, प्रौद्योगिकी का आधार है।

रात-दिन का समय बताना।
जीवित होने का प्रमाण दिखाना।
अपनो की दूरी को पल मे मिटाना।
यही परिवर्तन है, जिसमे सफल हो जाना।

स्थिरता मे जड़त्व, गति मे जीवन बसे।
रण मे प्रभा करे, आवाम मे जुनून भरे।
प्रयोग को स्मरण करे, नई दिशा में घर करे।
यही तो प्रौद्योगिकी है, जो समाज में परिवर्तन करे।

डॉ. अनामिका लखन
परिवार सदस्य - प्रतीक कुमार आनंद
आई आई एम तिरुचिरापल्ली
बैच - 2014-16

तकनीक — एक रंग

बदल रहा है हर एक रंग,
जब से आया तकनीक का संग।
कभी चिट्ठियाँ, अब चैट हैं,
भावनाएँ भी अब स्मार्ट हैं।
स्कूल की घंटी अब ऐप में बसी,
बाज़ार की रौनक मोबाइल में सजी
खेती से लेकर अंतरिक्ष तलक,
हर क्षेत्र में बदलाव की चमक।
पर इस रफ़्तार में सोचो ज़रा,
क्या कुछ पाया, या खोया भला?
रिश्ते जो थे दिल से जुड़े,
अब स्क्रीन के पीछे छिपे।
समाज बदला, जीवन आसान,
पर मन कभी-कभी होता है हैरान।
तकनीक हो साथ, मानवता रहे पास,
यही हो परिवर्तन का सच्चा विश्वास।

स्मृति लकड़ा
एम बी ए - एच आर

तू क्यों सिर्फ बदलाव का सोचता है??

तू क्यों सिर्फ बदलाव का सोचता हैं
क्यों कुछ कर पाता नहीं
क्यों जो तेरे लिए सही हैं
उस दिशा तू चल पाता नहीं
जानता हूँ हालात सही नहीं हैं
पर कही न कही कसुरवार तू खुद हैं
जो हर बार करने से पहले टालता बहुत हैं
झांक के देख उस सपने को कितना निभा पाया हैं
अभी मीलों दूर खड़ा सिर्फ वादे किए जा रहा है
कर इरादा इस बार, की पूरा किए बिना न ठहरेगा
अब कुछ भी हो जाए हार नहीं मानेगा

अमीषा बाहेती
एम बी ए

अस्तित्व

समय का पहिया चलता जा रहा,
विकास भी बढ़ता जा रहा।
बच्चों का शोर गुल और मस्ती सब,
मोबाइल में सिमटता जा रहा ।।
प्रत्यक्ष दोस्त सब बन गए परोक्ष,
फेसबुक, इंस्टा पे ही अब शेयर होते जोक ।
होठों की मुस्कान जब इमोजी बन गई ,
सारे दिल के जज़्बात भी इमोजी बन गए ।।
हुआ है नए युग का आगाज़,
पर क्या है इसमें ख़ास?
इंटरनेट के तार जोड़ती है दुनिया,
जो पहले अनंत आकाश सी थी दुनिया ।।
हर समस्या का समाधान अब गूगल बाबा बताते हैं,
और तब भी कुछ समझ न आए तो हम डेटा एनालिटिक्स अपनाते हैं।।
गूगल बाबा का स्थान अब Chat gpt ने ले लिया,
और हमने परिवर्तन का एक और पाठ पढ़ लिया।।
प्रौद्योगिकी की तरीके ज्यादा विकसित हो गए,
समाज भी कहाँ अविकसित रह गया?
बस इतना रखना है याद,
बस इतना रखना है याद कि इस परिवर्तन और विकास के युग में,
हम इंसान थे, हैं और रहेंगे ।।
न भूलना कभी अपने मूल्यों को इस विकास की राह में,
सदा सफलता मिलेगी तब तुम्हें अपने काम में ।
सारी प्रौद्योगिकी तुममें से है, इसलिए अपना भी ध्यान रखो,
विकास के इस भंवर में अपना अस्तित्व बचा के रखो ।।

सारिका जैन
पी जी सी बी ए ए

तिरुचिरापल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की छमाही बैठक दिनांक 26.08.2025 को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर पवन कुमार सिंह

तिरुचिरापल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की छमाही बैठक दिनांक 26.08.2025 में उपस्थित संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर पवन कुमार सिंह (बैठे हुए, दाहिने से दूसरे) विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों के प्रमुख एवं क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी

तिरुचिरापल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की छमाही बैठक दिनांक 26.08.2025 में उपस्थित संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री के. मुथुकुमारन (दूसरी पंक्ति में बैठे हुए, बाएं से पहले) तथा हिंदी अधिकारी, श्री चन्द्र मोहन तिवारी (दूसरी पंक्ति में बैठे हुए, बाएं से दूसरे) विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों के प्रतिनिधि एवं क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी

हिन्दी दिवस समारोह, 2024

संस्थान की हिंदी पत्रिका संगम के अंक-4 का विमोचन दिनांक 13.09.2024

हिंदी दिवस उद्घाटन समारोह

हिंदी दिवस उद्घाटन समारोह में श्रोतागण

हिंदी प्रतियोगिताएं 2024

हिंदी पुरस्कार वितरण 2024

ज्ञानम् अनन्तम्

IIM
TRICHY

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

Indian Institute of Management Tiruchirappalli

Pudukkottai Main Road, Chinna Sooriyur Village
Tiruchirappalli - 620 024, Tamil Nadu

cygnusadvertising.in